Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-23
कल्पादि सम्वत् 1972949117
सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा
दिनांक 30 अगस्त से 05 सितम्बर 2017 तक
भाद्रपद शुक्ल नवमी से भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी सम्वत् 2074 तक
वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

कारनामों को छिपाने... पृष्ठ- 3
माइग्रेन को हलके में.. पृष्ठ- 4
मानव जाति के धर्म.. पृष्ठ- 5
हिन्दू अस्तित्व, संकट... पृष्ठ- 8
शर्म भी न आयी.... पृष्ठ- 12

- समय तो सही है, पर मंशा तो हो
- संसदीय विशेषाधिकारों का घातक चक्रव्यूह
- कैसे हो सशक्त भारत का निर्माण
- देश भावना से ओतप्रोत है मद्रास उच्च न्यायालय का वंदेमातरम को अनिवार्य करने का निर्णय हिंदू संगठनों ने निर्णय का किया स्वागत

मुगल उद्यान का नाम यदि नहीं बदला गया तो हिन्दू महासभा धरना-प्रदर्शन करेगी

● संवाददाता ●

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री श्री वीरेश त्यागी ने घोषणा की है कि यदि राष्ट्रपति भवन स्थित मुगल उद्यान का नाम नहीं बदला गया तो शीघ्र ही राष्ट्रपति भवन पर विशाल धरना–प्रदर्शन किया जायेगा। हिन्दू महासभा के नेताओं ने पत्र लिखकर भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से राष्ट्रपति भवन में स्थित मुगल उद्यान का नाम बदलकर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद उद्यान करने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि ब्रिटिश वास्तुकार एडविन लुटियंस ने ब्रिटिश शासन काल में बने वायसराय शेष पृष्ठ 11 पर

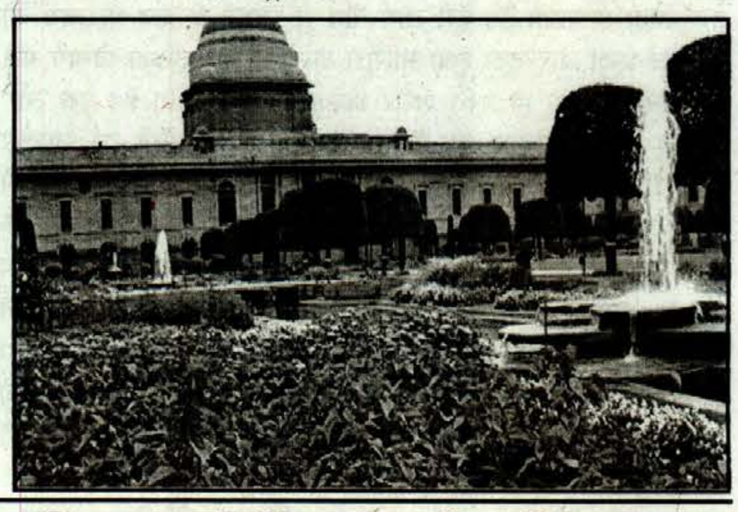

आतंकवाद पर भारत को बड़ी कामयाबी, अमेरिका ने हिज्बुल मुजाहिदीन को अंतरराष्ट्रीय आतंकी सूची में डाला

अमेरिका सेना पाकिस्तान स्थित आंतकी शिविरों पर बड़ी कार्यवाही करे : हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

अमेरिका ने पाकिस्तान को एक और झटका दिया है। अमेरिका के विदेश मंत्रालय ने आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन को अंतरराष्ट्रीय आतंकी संगठन की सूची में डाल दिया। अमेरिका इस आतंकवादी संगठन के सरगना सैयद सलाहुद्दीन को पहले ही अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी घोषित कर चुका है। हिज्बुल मुजाहिदीन कश्मीर में सक्रिय है। अमेरिका के इस कदम से पाकिस्तान को तगड़ा झटका लगा है। पाकिस्तान की सरकार अंतरराष्ट्रीय मंचों से कश्मीर के आतंकियों को अपना समर्थन देने की बात कहती आयी है लेकिन हिज्बुल के अंतरराष्ट्रीय आतंकी संगठन घोषित हो जाने के बाद उसका अपना रुख बदलने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। अमेरिका ने हिज्बुल के चीफ सैयद सलाहुद्दीन को पहले ही आतंकी घोषित कर रखा है। अमेरिका के इस निर्णय के बाद हिज्बुल मुजाहिदीन को मिलने वाले आर्थिक फंड पर रोक लगेगी जिससे यह संगठन कमजोर पड़ेगा। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच सोमवार २६ जून को होने वाली बैठक से ठीक पहले अमेरिका ने पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन के नेता सैयद सलाहुद्दीन को वैश्विक आतंकवादी घोषित किया। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने कहा कि उसने सैयद सलाहुद्दीन के नाम से मशहूर मोहम्मद यूसुफ शाह शेष पृष्ठ 11 पर

बदलती हुई जीवनशैली

बदली हुई जीवनशैली के साथ–साथ आज लोगों में अनेक प्रकार की तकलीफें घर कर गई हैं जिनमें से अनिद्रा का रोग भी एक है और बड़ी संख्या में लोग इससे पीड़ित हो रहे हैं। काम के लम्बे समय घंटों, लगातार बढ़ रही कार्पोरेट प्रतिस्पर्धा, विश्व भर में एक से दूसरे स्थान की लगातार यात्राओं के दौरान विभिन्न 'टाइम जोन' से होकर गुजरने, टैक्नोलॉजी के अधिक इस्तेमाल और अनियमित जीवनशैली के चलते आज नींद बहुत अनमोल हो गई है और इसी अनुपात में देश में अनिद्रा से पीड़ित लोगों के इलाज का धंधा जोरों पर चल निकला है। तनाव अथवा विभिन्न गैजटों के इस्तेमाल की लत के शिकार हो चुके इंवैस्टमैंट बैंकर, आई.टी. प्रोफेशनल, होम मेकर और कॉलेज स्टूडेंट्स ने अपने जीवन की लय को बिल्कुल तबाह कर दिया है जिसके परिणामस्वरूप वे अनिद्रा रोग अथवा स्लीपिंग सिंड्रोम के शिकार हो रहे हैं। इसी कारण गत कुछ वर्षों में देश भर में अनिद्रा रोग का उपचार करने वाली ३०० से अधिक स्लीप लैबोरेट्रीज कुकुरमुत्तों की तरह उग आई हैं। इस संबंध में मुम्बई स्थित 'स्लीप डिसऑडर्स क्लीनिक' की क्लीनिकल डायरेक्टर प्रीति देवनाणी का कहना है कि "हम लोगों ने स्वयं को २४ घंटे जागते रहने वाले समाज के रूप में तो ढाल लिया है परंतु हम अपनी नींद को उतना महत्त्व नहीं दे रहे जितना देना चाहिए।" अनेक कारणों से नींद के लिए दिए जाने वाले हमारे समय में कमी आ गई है और कई मामलों में तो यह तकलीफ इस कदर गंभीर रूप धारण कर लेती है कि रोगी को नींद के इंतजार में बिस्तर पर ही करवटें बदलते–बदलते ही २–२, ३–३ घंटे बीत जाते हैं।

नतीजा यह होता है कि व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर समय पर नहीं पहुँच पाता और कई बार तो उसे छुट्टी ही करनी पड़ जाती है। यही नहीं, यदि वह काम पर पहुँच भी जाए तो दिन भर थका–थका रहता है और सप्ताहांत पर सारा दिन और कई बार तो शाम के ४–४ बजे तक सोता ही रहता है। ऐसे लोग नींद से जागने के बाद भी स्वयं को बिल्कुल थका और टूटा हुआ महसूस करते हैं और उनका दिमाग भले ही काम कर रहा हो परंतु शरीर बिल्कुल बेजान होता है। ऐसे लोग 'डीलेड स्लीप सिंड्रोम' से पीड़ित होते हैं। ऐसे लोगों का उपचार जीवनशैली में बदलाव, ध्यान आदि से किया जाता है जिसका काफी अच्छा परिणाम मिलता है। इस समय देश में बढ़ रहे अनिद्रा रोग के कारण देश में 'स्लीप लैब्स' का धंधा जोरों पर चल रहा है। जहाँ स्लीप एप्निया जैसे रोगों का इलाज किया जाता है जिनमें नींद के दौरान व्यक्ति की साँस रुक जाती है। इन प्रयोगशालाओं में जितने भी अनिद्रा पीड़ित रोगी आते हैं उनमें से अधिकांश की बीमारी का कारण उनकी जीवनशैली में बदलाव ही होता है। इनमें बड़ी आयु के लोग ही नहीं बल्कि युवा भी शामिल हैं जो इस बात का मुँह बोलता प्रमाण है कि तनाव हमारे जीवन को किस प्रकार तबाह कर रहा है और यही कारण है कि हमारे लिए अपनी जीवनशैली में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है। इस संबंध में डॉक्टरों का यह भी कहना है कि अनिद्रा के परिणामस्वरूप व्यक्ति हाईपरटेंशन, डायबिटीज, डिप्रेशन, मोटापे और नपुंसकता आदि अनेक गंभीर रोगों का शिकार हो सकता है। अतः इससे बचाव में ही बचाव है। वैसे 'स्लीप लैब्स' में जाकर इलाज करवाना काफी महंगा है।

यही नहीं, इसका इलाज करने वालों को सुप्रशिक्षित होना चाहिए, जबकि इन प्रयोगशालाओं में काम करने वाले अधिकांश कर्मचारी भी लगभग उसी तरह की तकलीफों से पीड़ित होते हैं जिस तरह की तकलीफों से पीड़ित उनके पास आने वाले लोग होते हैं जिस कारण वे रोगियों का ठीक से इलाज नहीं कर पाते। प्रतिवर्ष ऐसे लोगों की संख्या २० प्रतिशत बढ़ रही है जिनके लिए पूरी नींद लेना प्राथमिकता नहीं रही व अधिक समय तक जागने के लिए बड़ी मात्रा में दवाएँ लेने से बड़ी संख्या में लोग 'हाईपर इनसोमनिया' का शिकार हो रहे हैं। ऐसे लोग जो काम के समय नींद के झोंकों की तकलीफ का शिकार हो जाते हैं उन्हें इसके इलाज के लिए भी योग तथा ज्वायंट 'स्पाऊसल थैरेपी' की आवश्यकता पड़ती है। निष्कर्ष स्वरूप इस संबंध में यही कहना उचित होगा कि जिस प्रकार मनुष्य के लिए समय पर जागना आवश्यक है उसी प्रकार समय पर सोना भी जरूरी है और जागने तथा सोने के बीच समुचित संतुलन बनाकर ही हम अपना जीवन पटरी पर ला सकते हैं।

साभार नई सदी पॉइन्ट

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोग स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें वरना वाइरल के चपेट में आ सकते है। पारिवारिक समस्याओं का समाधान होगा जिससे घर में सुखद वातावरण बना रहेगा। किसी अधिकारी के सहयोग से कुछ कार्यो के अच्छे परिणाम आयेंगे।

वृष : इस सप्ताह आप–अपने दिमाग से नकारात्मक विचारों को त्यागने का प्रयास करें। सम्बन्धों में सक्रियता बनायें रखने से रिश्तों में मधुरता आयेगी। कुछ लोगों की पड़ोसियों के साथ थोड़ी सी तकरार हो सकती है, लेकिन उसे नजरअंदाज करने का प्रयास करें।

मिथुन : इस सप्ताह समय का प्रबन्ध बहुत अच्छे तरीके करना होगा अन्यथा कुछ आवश्यक कार्य छूट सकते है। नौकरी से जुड़े लोगों को अतिक्ति लाभ मिलने के संकेत नजर आ रहें है। कुछ लोगों को कर्तव्यों को निभ्मने के लिए स्वाभिमान का द व भी लगाना पड़ सकता है।

कर्क : यह सप्ताह कुछ लोगों के लिए परिवर्तन तो करायेगा लेकिन साथ में कुछ समस्यायें भी पैदा करेगा। अतः सजग और सकारात्मक रहने की आवश्यकता है। जो सम्बन्ध बिगड़ गये थे उनमें पुनः मजबूती आयेगी। सोंच–समझकर लिए गये निर्णय ही आपको उँचे मुकाम तक पहुँचा सकते है।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोग अत्यधिक धन उपार्जन करने को लेकर मानसिक रूप से परेशान रहेंगे। नयें लागों को रोजगार के अवसर प्रदान होंगे जिससे उनके परिवार में सुखद वातावरण रहेगा। ऑफिस के कार्यो को लेकर मन व्यथित रहेगा।

कन्या : इस सप्ताह आप–अपने परिवार की समस्याओं को लेकर काफी तनाव ग्रस्त रहेंगे जिससे आपके अपने कार्यो में बाधायें अत्पन्न हो सकती है। कोई सोंची हुयी रणनीति सफल होने से मन में सकारात्मक विचार उत्पन्न होंगे। नवयुवक अपनी कार्ययोजनाओं के प्रति सकारात्मक रवैया अपनायें तो बेहतर रहेगा।

तुला : इस सप्ताह आप जो सोंचे वह कर डालें क्योंकि कल पर टालना उचित नहीं है। विरोधियों की बेवजह की टीका–टिप्पडियों पर विशेष ध्यान न दें। ऑफिस के कार्यो को गम्भीरता से करने की कोशिश करें। जीवन साथी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की कोशिश करें।

वृश्चिक : इस सप्ताह आप–अपने एटीटयूट में थोड़ा सा लचीलापन लायें अन्यथा कुछ नजदीकी लोग आप से नाराज हो सकते है। दूसरे की समस्याओं को देखकर आप दुःखी हो जायेंगे लेकिन कुछ मदद न कर पाने का मलाल होगा।

धनु : इस सप्ताह कुछ कार्यो के सफल होने से मानसिक उर्जा में वृद्दि होगी। नयें सम्बन्ध बनेंगे जिसके दूरगामी परिणाम अच्छे साबित होंगे। सामरिक योजनाओं के प्रति मन उत्तेजित रहेगा जिसके दूरगामी परिणाम बेहतर साबित होंगे। नवयुवकों का दिमागी संतुलन बिगड़ने की आशंका प्रतीत हो रही है।

मकर : इस सप्ताह अपने–आपको बेहतर प्रदर्शन करने के लिए तैयार रखना होगा क्योंकि अचानक आपके पास कुछ अच्छे अवसर आ सकते है। किसी का भी प्रतिरोध करने सें पूर्व उसके बारें में आकलन अवश्य कर लें। सहयोगियों की भावनाओं का दुप्रयोग न करें।

कुम्भ : इस समय कुछ ऐसा हो सकता जिसकी आपको उम्मीद नहीं होगी। कुछ लोग शारीरिक समस्याओं से घिरे रहेंगे जिससे कुछ जरूरी कार्यो में अड़चने उत्पन्न हो सकती है। अधिक श्रम करने से बचना होगा। छात्रों को बेहतर अवसर मिलेंगे।

मीन : इस सप्ताह कुछ लोग व्यस्तता के कारण, परिवार में समय न दें पाने के फलस्वरूप कुछ तीखी–मीठी नोंक–झोक हो सकती है। किसी बात को लेकर बेवजह की झिकझिक में न पड़े। घरेलू वस्तुओं की खरीददारी में धन का अत्यधिक व्यय हो सकता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदंरूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यंयन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्।।

श्रीभगवान् बोले–हे अर्जुन! अनुग्रहपूर्वक मैंने अपनी योगशक्ति के प्रभाव से यह मेरा परम तेजोमय, सबका आदि और सीमारहित विराट्रूप तुझको दिखलाया है, जिसे तेरे अतिरिक्त दूसरे किसी ने पहले नहीं देखा था।।४७।।

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानैर्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर।।

हे अर्जुन! मनुष्यलोक में इस प्रकार विश्वरूप वाला मैं न वेद और यज्ञों के अध्ययन से, न दान से, न क्रियाओं से और न उग्र तपों से ही तेरे अतिरिक्त दूसरे के द्वारा देखा जा सकता हूँ।।४८।।

मा ते व्यथा मा च विमूढभावोद्दष्टा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वंतदेव मे रूपमिदं प्रपश्य।।

मेरे इस प्रकार के इस विकराल रूप को देखकर तुझको व्याकुलता नहीं होनी चाहिये और मूढभाव भी नहीं होना चाहिये। तू भयरहित और प्रीतियुक्त मनवाला होकर उसी मेरे इस शंख–चक्र–गदा–पद्मयुक्त चतुर्भुज रूप को फिर देख।।४९।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 30 अगस्त से 05 सितम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

कारनामों को छिपाने का आसान तरीका जांच और फिर जांच

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

रक्षाबंधन के पर्व पर कैदियों को जेल में राखी बांधने पहुंची बहनें। इस तरह के शीर्षक से राखी के त्योहार मनाने के समाचार हर वर्ष प्रकाशित होते हैं। ऐसे समाचारों को सामने लाने का एक मकसद शायद यह दिखाना होता है कि प्रशासन कैदियों के लिए मानवता दिखा रहा है और यह कि उन्हें भी पर्व मनाने की छूट मिली हुई है। वैसे जेलों में किस तरह मानवाधिकारों का हनन होता है, यह वर्षो से शोध का विषय रहा है और कई क्रूर सच्चाइयों के सामने आने के बावजूद जेलों में बंद इंसानों की दशा जानवरों से भी बुरी बनी हुई है। जेलों में इंसानियत को ताक पर रखने का नया मामला मध्यप्रदेश के केन्द्रीय कारागार से आया है, जहां राखी के दिन किसी कैदी से मिलने पहुंचे दो बच्चों के चेहरों पर जेल प्रशासन ने मुहर लगा दी। जेल में कैदियों से मिलने वाले आए लोगों के हाथों पर मुहर लगाने की व्यवस्था है, ताकि कोई कैदी आगंतुक होने का बहाना न करके निकल जाए, ऐसा जेल अधिकारियों का कहना है। हालांकि यह व्यवस्था भी काफी अपमानजनक है और अंग्रेजी राज की याद दिलाती है, जब स्वतंत्रा सेनानियों को जेलों में डाल कर, तरह–तरह से प्रताड़ित करने के तरीके अंग्रेज सोचा करते थे। अफसोस की बात यह है कि जब हम आजादी की ७०वींवर्षगांठ मना रहे हैं, तब भी गुलामी की कुछ जंजीरों को तोड़ नहीं पाए हैं। कैदियों से मिलने पहुंचे लोगों के हाथों पर मुहर लगाना, गुलाम होने की याद ही दिलाती है। अगर किसी कैदी के भागने का डर है तो जेल प्रशासन को सुरक्षा व्यवस्था और पुख्ता करनी चाहिए। इसी तरह आगंतुकों की आवाजाही दर्ज करने के भी आधुनिक, वैज्ञानिक तौर–तरीकों पर विचार किया जा सकता है। बैंक की लाकरों, अतिसुरक्षित सरकारी दफ्तरों में जिस तरह लोगों के प्रवेश और निकासी की व्यवस्थाएं हैं, उनमें से किसी को अपनाया जा सकता है। लेकिन ऐसा करने के लिए जो इच्छाशक्ति होनी चाहिए। फिलहाल उसका सर्वथा अभाव दिख रहा है। जेल या पुलिस सुधार की बातें करने या सोचने में सरकार, प्रशासन की दिलचस्पी ही नजर नहीं आ रही। भोपाल के केन्द्रीय कारागार में बच्चों के चेहरों पर मुहर लगाना, न केवल मानवाधिकार, बल्कि बाल अधिकारों का भी उल्लंघन है। एक अबोध और एक किशोरवय बच्चों के गालों पर जेल प्रशासन ने मुहर लगा दी और वरिष्ठ अधिकारी इसे भूल से लगना बता रहे हैं। क्या हाथ की जगह गाल पर मुहर लगाने की भूल दो बार हो सकती है। सवाल यह भी है कि बच्चों पर मुहर लगाने की जरूरत ही क्यों पड़ी। क्या इसके पीछे बच्चों को प्रताड़ित करने की क्रूर मानसिकता नहीं झलकती। हिंदुस्तान में न बच्चे सुरक्षित हैं, न उनके अधिकार। तिस पर भी अगर बच्चे गरीब, वंचित या शोषित वर्ग के हों तो उन्हें प्रताड़ित करना और आसान हो जाता है। कैदी से मिलने पहुंचे बच्चे निश्चित ही संपन्न या रसूखदार परिवार के नहीं रहे होंगे, इसलिए परपीड़ा की मानसिकता से उनके हाथों की जगह गालों पर मुहर लगाई गई होगी और ऐसा करने वाले मन ही मन क्रूरता भरा आनंद ले रहे होंगे। राखी के दिन ये दोनों बच्चे गालों पर जेल की मुहर लिए, कैसे बाहर निकले होंगे और कैसे अपने घर पहुंचे होंगे, उनकी मानसिक स्थिति कितनी कष्टपूर्ण रही होगी, यह सोचकर ही कलेजा कांप उठता है। फिल्म में अमिताभ बच्चन के हाथ पर मेरा बाप चोर है, यह लिखा होना दर्शकों को द्रवित कर देता है। क्या ऐसी ही संवेदना असल जिंदगी में इन बच्चों के चेहरों पर मुहर लगी देखकर नहीं जागनी चाहिए। अगर एक समाज के रूप में अपने बच्चों के साथ ऐसी प्रताड़ना देखकर भी हम विचलित नहीं होते हैं, तो हमें अपने जिंदा होने पर संशय करना चाहिए। इस मामले की खबर सोशल साइट्स के जरिए फैली, तो मध्यप्रदेश सरकार थोड़ी हरकत में आई। मध्यप्रदेश मानवाधिकार आयोग ने स्वत संज्ञान लेते हुए प्रताड़ित बच्चों के लिए दस हजार रुपयों का मुआवजा देने के निर्देश सरकार को दिए हैं, साथ ही मामले में एक हफ्ते के भीतर कार्रवाई करने कहा है। आयोग ने इस घटना को अमानवीय बताया है। गनीमत है कि उन बच्चों के लिए यह पहल हो रही है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि जब जेल अधिकारी इसे पहले ही भूलवश हुई घटना बता रहे हैं तो जांच क्या सही दिशा में आगे बढ़ पाएगी। क्या इस मामले पर लीपापोती की कोशिशें नहीं होंगी। एक नहीं दो बच्चों के चेहरों पर एक ही जगह मुहर लगाने का काम अनजाने में नहीं हुआ है, इस बात को कैसे साबित किया जाएगा। और आगे ऐसी घटना नहीं होगी, इसकी गारंटी कौन लेगा।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

समय तो सही है, पर मंशा तो हो

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

जम्मू-कश्मीर में अशांति का सबसे बड़ा कारण धारा ३७० एवं अनुच्छेद ३५ए है। इन्हीं दोनों के कारण जम्मू–कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा हासिल है, जिसकी आड़ में कश्मीरी अलगाववादी पाकिस्तान की शह पर कश्मीरी नौजवानों को बरगलाकर कश्मीर की आजादी के नाम पर उग्रवाद की ओर धकेल रहे हैं। देश का हित चाहने वाले जम्मू–कश्मीर सहित देशभर के लोगों को मोदी सरकार से उम्मीद है कि वह कड़ा कदम उठाकर धरती का स्वर्ग कहलाने वाले कश्मीर में धारा ३७० एवं ३५–ए हटाकर शांति बहाली और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगी। धारा ३७० एवं अनुच्छेद ३५–ए की आड़ में दो क्षेत्रिय पार्टियों के नेता लोगों की भावनाओं को भड़का कर अर्धदशक से भी ज्यादा समय से प्रदेश में जमे हुए हैं और प्रदेश विकास की दौड़ में सम्पूर्ण भारत से बहुत पीछे छूट गया है। अनुच्छेद ३५–ए की आड़ में तो जम्मू–कश्मीर की लड़कियों का ही नहीं बल्कि भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से आये शर्णार्थियों से भी भेदभाव किया जाता रहा है। संविधान विशेषज्ञों का कहना है कि कोई भी कानून या संविधान संशोधन संसद के दोनों सदनों में पारित किये बिना लागू नहीं किया जा सकता, लेकिन कहा जाता है कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रपति के विशेष आदेश से इसे जम्मू–कश्मीर में लागू करवा दिया था, जिसका दंश दशकों बाद भी जम्मू–कश्मीर की लड़कियों और वहां की जनता को झेलना पड़ रहा है। अब जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट में है तो न्याय की उम्मीद की जा सकती है। धारा ३७० एवं ३५–ए के मामले में जम्मू–कश्मीर की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती और पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला असमंजस में हैं और उन्हें लगता है कि केन्द्र की भाजपानीत सरकार सुप्रीम कोर्ट में इसे समाप्त करने की वकालत कर सकती है और इसी वजह से महबूबा मुफ्ती एवं फारूक अब्दुल्ला दिल्ली में ल बिंग कर रहे हैं और महबूबा मुफ्ती तो यहां तक कह गई कि यदि ऐसा हुआ तो कोई भारत का तिरंगा झंडा जम्मू–कश्मीर में कोई नहीं उठायेगा लेकिन जब जम्मू–कश्मीर में सैन्य बलों पर वहां के स्थानीय नागरिक पत्थरबाजी करते हैं तो वह खामोश रहती हैं। दरअसल इस सबका सबसे ज्यादा फायदा दशकों से अब्दुल्ला और मुफ्ती परिवार उठाता आ रहा है और उन्हें, उनकी पार्टियों और अलगाववादियों को ही इससे तकलीफ है। यही फारूक अब्दुल्ला कश्मीरी जनता के प्रतिनिधि के तौर पर केवल ७ प्रतिशत वोट पड़ने के बावजूद सांसद बन गये हैं और भारत सरकार की सारी सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। दोनों ही पार्टियों के नेता विपक्ष के साथ लाबिंग में जुट गये हैं ताकि भाजपा पर दबाव बनाया जा सके। दरअसल १९४७ में बंटवारे के दौरान पाकिस्तान से लाखों लोग शरणार्थी बनकर भारत आए थे। यह लोग देश के कई हिस्सों में बस गये थे और आज वहीं के नागरिक बन चुके हैं। दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता, चेन्नई, उत्तर प्रदेश या जहां कहीं भी यह लोग बसे, आज वहीं के स्थायी निवासी बन गये हैं। जम्मू–कश्मीर में कई दशक पहले बसे यह लोग आज भी शरणार्थी ही कहलाते हैं और तमाम मौलिक अधिकारों से वंचित हैं। १९४७ में हजारों लोग पश्चिमी पकिस्तान से आकर जम्मू में बसे थे। इन हिंदू परिवारों में लगभग ८० प्रतिशत दलित थे। आज भी इन्हें न तो स्थानीय चुनावों में वोट डालने का अधिकार है, न सरकारी नौकरी पाने का और न ही सरकारी कॉलेजों में दाखिले का अधिकार दिया गया है। यह स्थिति सिर्फ पश्चिमी पकिस्तान से आए इन हजारों परिवारों की ही नहीं बल्कि लाखों अन्य लोगों की भी है। भारतीय संविधान की बहुचर्चित धारा ३७० जम्मू–कश्मीर को कुछ विशेष अधिकार देती है। १९५४ के जिस आदेश से अनुच्छेद ३५–ए को संविधान में जोड़ा गया था, वह आदेश भी अनुच्छेद ३७० की उपधारा १, के अंतर्गत ही राष्ट्रपति द्वारा पारित किया गया था। इसे मुख्य संविधान में नहीं बल्कि परिशिष्ट में जोड़ा गया है ताकि इसकी संवैधानिक स्थिति का पता ही न चल सके। भारतीय संविधान में एक नया अनुच्छेद जोड़ देना सीधे–सीधे संविधान को संशोधित करना है। अनुच्छेद ३५–ए दरअसल अनुच्छेद ३७० से ही जुड़ा है और इस बार मामला सुप्रीम कोर्ट में है और सरकार भी अपना पक्ष रखने वाली है और उम्मीद है कि सरकार इसकी समाप्ति का समर्थन करेगी लेकिन फिलहाल अटार्नी जरनल वेणुगोपाल ने कोर्ट में कहा है कि केन्द्र सरकार इस पर कोई हलफनामा दायर नहीं करना चाहती, क्योंकि इस पर विस्तृत बहस की जरूरत है और इसे बड़ी बेंच के पास भेजा जाना चाहिए क्योंकि इसमें संवैधानिक मुद्दे जुड़े हैं, जिसके बाद मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय बेंच सुनवाई कर रही है। भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के नेता और स्वयंसेवक लगातार कहते आये हैं कि भाजपा की सरकार बनने पर धारा ३७० समाप्त होगी। पहले मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की अगुवाई में सरकार बनी थी, तब इस पर कोई विचार ही नहीं हुआ और फिर अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में १४ दलों की सरकार बनने पर भी इस पर कुछ नहीं हो सका, लेकिन इस बार धारा ३७० एवं ३५–ए के प्रावधानों से त्रस्त लोगों को उम्मीद बंधी है कि भाजपा नेतृत्व जम्मू–कश्मीर पर कोई भी फैसला करने में सक्षम है और अब तो संसद के दोनों ही सदनों में भाजपा को पूर्ण बहुमत हासिल है और वह कोई भी निर्णय लागू करने में पूरी तरह सक्षम है, जिसे राज्य में कठोरता से लागू किया जा सकता है।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

माइग्रेन को हलके में नहीं लें, इस तरह पा सकते हैं निजात

आज के समय में हम सभी पर काम का बोझ इतना बढ़ गया है कि कब किस रोग की चपेट में आ जाएँ पता ही नहीं चल पाता। दरअसल कोई भी रोग कदम–दर–कदम हम पर आक्रमण करता है परन्तु जीवन की व्यस्तताओं के कारण स्वास्थ्य हमारी प्राथमिकता नहीं रहा और हममें से अधिकांश लोग छोटी–मोटी समस्याओं को नजरअंदाज कर देते हैं। यही छोटी–मोटी समस्याएँ आगे चलकर उग्र रूप धारण कर लेती हैं।

'सिरदर्द' एक बहुत ही आम समस्या है। यह सिरदर्द जब केवल आधे सिर में होता है तो इसे आधा सीसी या माइग्रेन कहते हैं। आँख के ऊपर से शुरू होता यह दर्द सिर के ऊपर एक स्थान पर स्थिर हो जाता है अथवा सिर के पीछे तक चला जा सकता है। जी मिचलाना, आँखों के आगे अंधेरा छा जाना, चक्कर आदि इसके आम लक्षण हैं।

माइग्रेन का दर्द इतना भयंकर होता है कि प्रायः व्यक्ति अपने पर नियंत्रण नहीं रख सकता। दैनिक कामकाज करते समय यदि आपके सिर में बार–बार हल्का सा भी दर्द होता है तो उसके प्रति सतर्क रहे क्योंकि हो सकता है आप भी माइग्रेन के शिकार बन रहे हों।

डॉक्टरी इलाज के साथ–साथ मालिश भी माइग्रेन से निजात पाने में आपकी मदद कर सकती है। जिस समय माइग्रेन का दौरा पड़े उस समय सिर पर हल्की–हल्की मालिश किया जाना लाभदायक होता है। यदि आप मालिश करवाने की स्थिति में न हों तो कनपटियों को अंगुलियों से दबाएँ तथा अंगूठे को मोड़कर माथे पर दबाव दें। इससे आपको अस्थायी तौर पर राहत जरूर मिलेगी। एक अच्छे मालिश करने वाले को यह पता होता है कि खोपड़ी के किस हिस्से को कितना दबाना या सहलाना है। वे लोग जो माइग्रेन से ग्रस्त हैं उन्हें थोड़े–थोड़े समय बाद मालिश करवाते रहना चाहिए यह निश्चित ही उनके लिए लाभदायक होगा। मालिश के समय आस पास का वातावरण बिल्कुल शांत होना चाहिए। वहाँ टीवी, रेडियो आदि किसी भी प्रकार का शोर नहीं होना चाहिए जिन्हें रोशनी से तकलीफ हो उन्हें बत्तियाँ भी बंद कर देनी चाहिए। यदि रोगी चाहे तो दरवाजे तथा खिड़कियों पर पर्दे भी लगाए जा सकते हैं।

अनेक घरेलू उपाय भी ऐसे हैं जो आपको माइग्रेन से राहत दिला सकते हैं। जैसे लौंग या बड़ी इलायची का छिलका पीसकर थोड़ा गर्म करके सिर पर लेप करने से दर्द में राहत मिलती है। शुद्ध शहद में थोड़ा नमक मिलाकर चाटने या पुराने गुड़ में थोड़ा कपूर मिलाकर सूर्योदय के पहले खाने से भी माइग्रेन से राहत मिलती है। सुबह गाय का ताजा घी नाक में चढ़ाने या केसर डालकर सूंघने से आधा सीसी का दर्द दूर हो जाता है। केसर को बादाम के तेल में मिलाकर सूंघने से भी दर्द कम हो जाता है। ऐसा दिन में लगभग तीन बार करना चाहिए। रीठे को पानी में पीसकर उसका नस्य देना भी फायदेमंद होता है। नीम की पत्तियाँ, काली मिर्च और चावल के मिश्रण का भी नस्य दिया जा सकता है। इसके लिए नीम की पत्तियों को काली मिर्च और चावल के साथ पीस लें। इस पाउडर का नस्य लेने से दर्द जरूर दूर होता है। नौसादर के साथ हल्दी मिलाकर सूंघने या पुरानी रूई का धुआँ सूंघना भी माइग्रेन से राहत दिलाता है। दर्द से तुरंत राहत के लिए नारियल पानी नाक में टपकाएँ अथवा जमालगोटा के बीज पीसकर जिस तरफ दर्द हो रहा हो उससे विपरीत दिशा में माथे पर लगाएँ। लगभग तीन मिनट बाद इसे कपड़े से पोंछ दें। यदि किसी प्रकार की जलन महसूस हो तो थोड़ा सा देशी घी लगा लें। दर्द उठने पर फूलों का रस विपरीत दिशा वाली नासिका में डालने से भी तुरंत आराम मिलता है। सुबह होते ही गाय का ताजा दूध नाक से ऊपर खींचने से भी माइग्रेन से निजात मिलती है। यदि रोग बहुत पुराना हो गया हो तो भी परेशानी की कोई बात नहीं। इसके लिए गाजर के पत्तों को उबाल कर ठंडा कर लें और उसका पानी नाक और कान में डालें। ऐसा करने से पुराने से पुराना माइग्रेन भी ठीक हो जाता है।

इन उपायों के साथ आपकी दिनचर्या में बदलाव भी माइग्रेन में राहत दिलाता है। जहाँ तक संभव शेष पृष्ठ 10 पर

प्रत्येक परिवार के लिए २ उपयोगी दुर्लभ फकीरी नुस्खे

ऋषि परम्परा से प्राप्त मलेरिया की एक रामबाण औषधि हम यहाँ दे रहे हैं, इस औषधि का प्रयोग हमने स्वयं भी किया है, यह वास्तव में अदभुत है। आक का पौधा हमारे देश के ग्रामों में सर्वत्र सुलभ है, अतः इसका प्रयोग आम आदमी भी बहुत आसानी से कर सकता है। इस अनुभूत प्रयोग का लाभ आप तो उठाएँ ही औरों को भी इसके विषय में जानकारी दें।

मलेरिया का बुखार लोगों को अलग–अलग प्रकार से आता है। मुख्य रूप से उसमें शरीर टूटता है, सिर दुखता है, उलटी होती है। कभी एकांतरा और कभी मौसमी रूप से भी मलेरिया का बुखार आता है और कई बार यह जानलेवा भी सिद्ध होता है। इसकी एक सरल, सस्ती तथा ऋषि परम्परा से प्राप्त औषधि है–हनुमानजी को जिसके पुष्प चढ़ाते हैं उस आकड़े की ताजी, हरी डाली को नीचे झुकाकर (ताकि दूध नीचे न गिरे) उंगली जितनी मोटी दो डाली काट लें। फिर उन्हें धो लें। धोते वक्त कटे हिस्से को उंगली से दबाकर रखें ताकि डाली का दूध न गिरे। एक स्टील की पतेली में ४०० ग्राम दूध (गाय का हो तो अधिक,अच्छा) गर्म करने के लिए रखें। उस दूध को आकड़े की दोनों डंडियों से हिलाते जायें। थोड़ी देर में दूध फट जाएगा। जब तक मावा न तैयार हो जाये तब तक उस आकड़े की डंडियों से हिलाते रहें। जब मावा तैयार हो जाये तो उसमें मावे से आधी मिश्री अथवा शक्कर डालकर (इलायची–बादाम भी डाल सकते हैं) ठंडा होने पर एक ही बार में पूरा मावा मरीज को खिला दें किंतु बुखार हो तब नहीं, बुखार उतर जाने पर ही खिलायें। इस प्रयोग से मरीज को कभी दुबारा मलेरिया नहीं होगा। रक्त में मलेरिया की 'रींग्स' दिखेंगी तो भी बुखार नहीं आयेगा और मलेरिया के रोग से मरीज सदा के लिए मुक्त हो जाएगा। १ से ६ वर्ष के बालकों पर यह प्रयोग नहीं किया गया है। ६ से १२ वर्ष के बालकों के लिए दूध की मात्रा आधी अर्थात् २०० ग्राम लें और उपरोक्त अनुसार मावा बनाकर खिलायें। अभी वर्तमान में जिसे मलेरिया बुखार न आता हो वह भी यदि इस मावे का सेवन करे तो उसे भी भविष्य में कभी मलेरिया नहीं होगा। दिमाग के जहरी मलेरिया में भी यह प्रयोग अक्सीर इलाज का काम करता है। अतः यह प्रयोग सबके लिए करने जैसा है। **साभार आर्दश पंचायती राज(पत्रिका)**

दाँतों व मसूड़ों के लिए एक दुर्लभ फकीरी नुस्खा

आज से कोई सात–आठ वर्ष पहले की बात है। मेरे छोटे भाई की पत्नी नूतन की पेट की आँतों में सूजन आ गई थी। डॉक्टरों ने अंग्रेजी दवाईयाँ दीं, उससे पेट में लाभ तो हुआ किन्तु मुँह के सारे मसूढ़े ढीले पड़ गए तथा सारे दाँत भी हिलने लगे। एक अच्छे डेंटिस्ट को दिखाया तो उसने बताया कि सारे दाँत निकलवाने पड़ेंगे, फिर नकली दाँत लगाए जाएँगे। उस समय नूतन की उम्र केवल ४० वर्ष ही थी–अतः डेंटिस्ट के सुझाव पर अमल ना करके परिवार के लोग कोई अन्य उपाय ढूँढ़ने लगे। इसी क्रम में हमें जामुन की छाल का यह फकीरी नुस्खा मिल गया–लगभग पन्द्रह दिन के प्रयोग से ही मसूढ़े कस गए, खून आना भी बंद हो गया। इसके बाद लंदन में रह रही मेरी पुत्री के मसूढ़ों में भी प्रॉब्लम हो गई थी, उसने फोन पर बताया कि मसूढ़ों से खून आता है। यहाँ डेंटिस्ट के इलाज से भी कोई लाभ नहीं हो रहा है। हमने उसे कुरियर से जामुन की छाल भेज दी तथा यही प्रयोग करने को कहा–वह भी अब बिलकुल ठीक हो गई है। अतः यह एक आजमाया हुआ नुस्खा है और आप सबके लिए ही यहाँ दिया जा रहा है। जामुन के वृक्ष की छाल के छोटे–छोटे पीस बनाकर उन्हें पानी में लगभग एक घंटे तक उबालें। फिर इस पानी को ठंडा करके इस पासनी से दस पन्द्रह कुल्ले रोजाना करें। बचे हुए पानी को एक शीशे की बोतल में भर कर फ्रिज में रख लें। एक बार में केवल चार–पाँच दिन के लिए ही यह पानी तैयार करें। यह हिलते दाँतों व मसूढ़ों के लिए एक अक्सीर नुस्खा है। **साभार आर्दश पंचायती राज(पत्रिका)**

मानव जाति के धर्म ग्रन्थ 'वेद'

रामनिवास

संसार का समस्त बुद्धिजीवी समुदाय एक स्वर से यह स्वीकार करता है कि ऋग्वेद संसार का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। पूर्वाग्रहों से ग्रस्त कुछ विदेशी विद्वानों एवं तदनुवर्ती कतिपय भारतीय जनों द्वारा वेदों के सम्बन्ध में दिए गए तर्कों पर मिल-बैठकर विचार करें, तो बड़ी सरलता से यह सिद्ध किया जा सकता है कि चारों ही वेद सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वरीय ज्ञान के रूप में प्रकट

होने के कारण संसार की ग्रन्थ-राशि में सबसे प्राचीनतम हैं। यद्यपि आज कुछ लोग अन्य कई ग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं, लेकिन ईश्वरीय ज्ञान के रूप में वेदों को जो सम्मान व गौरव मिला है, वह अन्य किसी ग्रन्थ को नहीं मिला। यह सच हो सकता है कि अन्य ग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान मानने वालों की संख्या अधिक हो और लोकतांत्रिक-पद्धति का सहारा लेकर वे लोग किसी ग्रन्थ-विशेष को ईश्वरीय ज्ञान के रूप में स्वीकार करा लें, लेकिन क्या सत्य को संख्या के बल से प्रमाणित किया जा सकता है? अगर ऐसा होता तो विज्ञान का विकास संभव नहीं था, क्योंकि विज्ञान के बढ़ते कदमों ने सृष्टि के जिन सत्य सिद्धान्तों को उद्घाटित किया, वे बहुमत की समझ से आज भी बहुत दूर हैं, जबकि जन-सामान्य नित्य कर्मों में उनका प्रयोग बड़ी सहजता से कर रहा है। विज्ञान के निरन्तर अबाध गति से बढ़ते हुए कदम सिद्ध करते हैं कि सत्य को जानकर मुट्ठी भर मानव भी पूरी निष्ठा व शक्ति के साथ उस सत्य को आत्मसात करते हुए संसार में फैलाने के लिए कमर कस लें तो वह सत्य जनमानस में ओत-प्रोत हो ही जाता है। इस संकल्प से अनुप्राणित होकर हमें यह सत्य संसार के कोने-कोने में फैलाना होगा कि वेद ही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान है और वेद ही सम्पूर्ण मानव जाति के एकमात्र धर्म ग्रन्थ हैं।

मानव का स्वभाव है कि सत्य को जान लेने के बाद वह उसे स्वीकार कर ही लेता है। सत्य से आँखें चुराना मानव-स्वभाव का अपमान है, जिसे वेद की भाषा में 'आत्म-हनन' कहते हैं। कोई भी विवेकशील पुरुष अपने स्वभाव का अपमान व 'आत्म-हनन' करना नहीं चाहेगा। वेद को ईश्वरीय ज्ञान व मानव जाति का धर्म ग्रन्थ सिद्ध करने के पीछे हमारा यही उद्देश्य है कि सच को जानकर कुछ सत्यशील सज्जन पुरुष इसे विश्व के उर्वर जनमानस में पिरोने का सत्संकल्प लेकर एक विशाल अभियान प्रारम्भ करें। उनका यह सत्प्रयास 'सत्योपदेश के सिवाय मनुष्य के कल्याण का और कोई उपाय नहीं है।' वैदिक ऋषियों की मान्यता रही है कि 'तर्क प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि न तु कथनमात्रेण' अर्थात् किसी वस्तु की सिद्धि तर्क और प्रमाणों से होती है, कथन मात्र से नहीं। तर्क और प्रमाणों की कसौटियों पर परखे बिना और सत्य सिद्ध हुए बिना हमारे वैदिक ऋषियों ने कहीं कुछ भी नहीं लिखा। हमें अगर कहीं कुछ ऐसा मिलता है तो वह हमारे मध्यकाल के अधकचरे आचार्यों के प्रक्षिप्त लेख हैं, वैदिक ऋषियों के नहीं। ऋषियों ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान व मानव जाति का एकमात्र धर्म-ग्रंथ इसीलिए कहा है, क्योंकि वेद ऐसा है हम पहले तर्कों द्वारा यह सिद्ध करके कुछ विश्वसनीय प्रमाण भी प्रस्तुत करेंगे।

आगे बढ़ने से पहले ईश्वरीय ज्ञान वेद की आवश्यकता एवं उपयोगिता को स्पष्ट करना अति आवश्यक प्रतीत होता है। न्याय व्यवस्था का एक मानवीय पक्ष यह है कि अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का ज्ञान कराये बिना किसी को दंड देना न्याय-संगत नहीं कहा जाता। उस सर्वोच्च सत्ता के लिए भी यह परमावश्यक है कि वह अपनी कर्मफल व्यवस्था व दंड नीति के प्रचलन से पूर्व मानव मात्र को उससे संबंधित सिद्धान्तों की समुचित जानकारी अवश्य दे। भलाई-बुराई का बोध कराये बिना दण्डित करना अपने आप में घोर अन्याय है और परमेश्वर जो सबका पिता व परम दयाल है वह सम्पूर्ण मानव जाति के साथ ऐसा अन्याय नहीं कर सकता। उसने सृष्टि के प्रारम्भ में लगभग दो अरब वर्ष पूर्व ही अपनी कर्मफल व्यवस्था के मूल सिद्धान्त वेदों के माध्यम से मानव मात्र के लिए प्रकट कर दिए थे, हम उन्हें न पढ़ें, तो इसमें दोष हमारा है, ईश्वर का नहीं।

तर्कों द्वारा वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करना बहुत सरल है। जो वस्तु जैसी है उसे वैसी सिद्ध करने में कठिनाई कैसी? यह काम वही कर सकता है, जिसे उस वस्तु का सच्चा व सम्पूर्ण ज्ञान हो। वेदों को ईश्वरीय ज्ञान आदि काल से ही माना जाता रहा है।

हर मनुष्य के पास दो प्रकार की आँखें होती हैं, जिन्हें शास्त्र की भाषा में 'चर्म-चक्षु' और 'प्रज्ञा-चक्षु' कहते हैं। 'चर्म-चक्षु' अर्थात् सामान्य आँखों के लिए ईश्वर ने जैसे सूर्य को बनाया है, वैसे ही 'प्रज्ञा-चक्षु' अर्थात् बुद्धिरूपी आँखों के लिए परमेश्वर ने वेदों के माध्यम से ज्ञान का प्रकाश दिया है। हमारी दार्शनिक परम्परा में ज्ञान और प्रकाश को पर्यायवाची मानने के मूल में यही दृष्टि रही है। जैसे सूर्य के प्रकाश में आँखें हर दिशा में दूर-दूर तक देख सकती हैं, वैसे ही वेदों के ज्ञान आलोक में हमारी बुद्धि चतुर्दिक-चिन्तन के साथ-साथ बहुत आगे तक देखने व सोचने की शक्ति पा लेती है। जैसे सूर्य को परमेश्वर ने सृष्टि के प्रारम्भ में बना दिया था, वैसे ही वेदों का ज्ञान भी सृष्टि की पहली सीढ़ी के रूप में प्रादुर्भूत अग्नि, वायु, आदित्य और अडिगरा नाम के चार ऋषियों के आत्मा में प्रकाशित कर दिया था। ईश्वर को मानने वाले सभी लोग यह भी मानते हैं कि यह संसार ईश्वर ने ही बनाया है। यह भी कहा जाता है कि ईश्वर ने जो ज्ञान दिया है, वह संसार के सम्बन्ध में और संसार में रहने के लिए ही दिया है। यह सच है कि जो ईश्वरीय-ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाना चाहिए, ताकि उससे कोई वंचित न रहे। दूसरी बात यह ईश्वरीय सृष्टि के नियमों के विपरीत नहीं होना चाहिए। विज्ञान के विरुद्ध ढेर सारी बातें जिन ग्रन्थों में भरी पड़ी हों, उन्हें ईश्वरीय ज्ञान कैसे कहा जा सकता है? ईश्वरीय-ज्ञान की भाषा अपने आप में पूर्ण वैज्ञानिक होनी चाहिए। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वेद ही एकमात्र ऐसे ग्रन्थ हैं, जो इन सभी कसौटियों पर खरे सिद्ध होते हैं। चारों वेदों में सृष्टि-सिद्धान्तों व वैज्ञानिक नियमों के विरुद्ध कुछ भी नहीं है। गणित विद्या से लेकर शरीर-विज्ञान, चिकित्साशास्त्र, राजनीति, न्याय-विधान, समाजशास्त्र, जीव-विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, गान विद्या, विद्युत विद्या, विमानशास्त्र और खगोल विद्या तक मानव जीवन को सुखी, समृद्ध व सम्पूर्ण बनाने के लिए जो-जो विद्याएँ प्रचलित हैं उन सबका मूल स्रोत वेद ही है। भाषा के सम्बन्ध में सभी जानते हैं कि संसार के प्राचीनतम् ग्रंथ वेद की संस्कृत भाषा आज के नवीनतम आविष्कार कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है। वेदों में प्राप्त विद्याएँ ही भाषा विकासवाद के काल्पनिक सिद्धान्त को शीर्षासन कराने के लिए पर्याप्त हैं। वेदों के अतिरिक्त संसार के किसी ग्रन्थ में ये गुण नहीं, जिनके आधार पर उसे ईश्वरीय-ज्ञान कहा जा सके।

वैसे तो हम वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हैं और संसार के अन्य ग्रंथों की प्रामाणिकता भी उनके वेदानुकूल होने में है। ईश्वरीय-ज्ञान वेद को मानवीय बुद्धि के सहारे प्रमाणित करने की क्या आवश्यकता? क्या सूर्य को दीपक या मानव-निर्मित अन्य विद्युत लैम्प के प्रकाश में देखा जाता है? प्राचीन काल से लेकर देश-विदेश के निष्पक्ष विद्वानों ने वेदों के बारे में जो गौरवपूर्ण वाक्य कहे हैं, उनमें से कुछ वाक्य यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं—मानव धर्मशास्त्र के प्रथम प्रणेता महर्षि मनु वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं मनु लिखते हैं—**'धर्म जिज्ञासमानानां परमं प्रमाणं श्रुतिः'।** धर्म जिज्ञासुओं के लिए वेद परम प्रमाण हैं। मनु कहते हैं कि पितर, देव और मनुष्यों का मार्गदर्शक **'सर्वशास्त्रं तु वेद शास्त्रत् सनातनात्,'**

अर्थात् सनातन वेदों से ही सब शास्त्र निकले हैं।

महात्मा बुद्ध को लोगों ने अनजाने में वेद-विरोधी के रूप में प्रचारित कर दिया है। लेकिन महात्मा बुद्ध ने स्वयं ब्रह्मचर्य धारण करके, गुरुकुल में रहकर वेद पढ़े थे ऐसा उनके जीवन-चरित्र 'ललित-विस्तार' में आता है। सुत्तनिपात में कई स्थानों पर वेद की उन्होंने खूब प्रशंसा की है। गुरु नानक देव वेदों को ईश्वर का ज्ञान मानते थे। 'ओंकार वेद निरमये', 'हरि आज्ञा होये वेद पाप-पुन्न विचारिआ'। जपुजी में लिखा है-'असंख्य ग्रन्थ मुखि वेद पाठ'। योरोप के ईसाई विद्वानों यहाँ तक कि अनेक पादरियों ने खुले हृदय से वेद को ईश्वरीय-ज्ञान स्वीकार किया है। मुसलमान मत के कई विद्वानों के वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने सम्बन्धी प्राचीन व नवीन नाम कवि लॉबी से लेकर वर्तमान में अनवर शेख तक लिये जा सकते हैं। इन सब तथ्यों से स्पष्टतः सिद्ध है कि वेद ही एकमात्र ईश्वरीय ज्ञान एवं मानव मात्र के धर्मग्रन्थ हैं। जिस प्रकार ईश्वर के बनाए हुए सूर्य, चन्द्रमा, वायु और जल आदि पर मनुष्य का समान अधिकार है, उसी प्रकार वेदों पर सबका समान अधिकार है। हर मनुष्य वेद पढ़ और सुन सकता है चाहे वह किसी देश, किसी जाति या मत-पन्थों का मानने वाला हो। जिस दिन मनुष्य इस सत्य को स्वीकार कर लेगा उसी दिन से मानव जाति की अधिकांश समस्याएँ दूर हो जाएँगी।

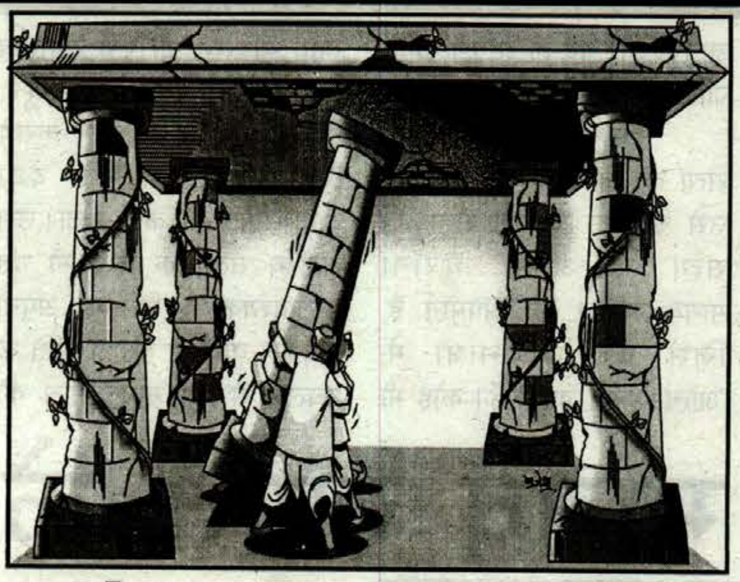

संसदीय विशेषाधिकारों का घातक चक्रव्यूह

✍ हरिकृष्ण निगम

आज देश में घृणा की राजनीति ने संसदीय प्रणाली एवं लोकतंत्रीय ढांचे को ही लगता है एक आत्मघाती कगार पर ला खड़ा कर दिया है। संसदीय विशेषाधिकारों जैसे राज्यसभा के अपने अनुपात के बल पर नामांकित कुछ सांसद या राज्यों की विधनसभाओं के सदस्य अथवा न्यायपालिका के अनेक चर्चित न्यायाधीश कुख्यात आरोपी या अपराधी होने पर भी जिस कवच के पीछे से निर्लज्जता पूर्वक अपने बचाव में शेखचिल्लियों की तरह प्रत्युत्तर या धमकी भरे केन्द्रीय जांच एजेन्सियों, स्वायत्त स्वतंत्र नियामक प्राधिकरणों व विश्वविख्यात न्यायविदों के विरुद्ध वक्तव्य देते हैं, वह उतना ही हास्यास्पद लगते हैं, जितना हमारे लोकतंत्र के लिए एक बड़ा खतरा भी प्रतीत होते हैं। विशेषाधिकारों का यह रक्षाकवच उन्हें या उनके पूरे कुनबे को जो पूर्ण कालिक रूप से सक्रिय राजनीति में लिप्त हैं, जिस तरह उपलब्ध है उसे उठा लिया जाए तो उन पर सहज ही महाभियोग लगाने की कोई भी माँग कर सकता है। मात्र यह वैधानिक रक्षा छतरी उनके ऊपर से उठाने भर की धर है। समाचार पत्रों के भारी भरकम नाम वाले सम्पादक भी अपने पत्रों को 'टेबलायड' जैसा बनाते हुए कभी 'मोदी' के गुजरात व अन्य प्रदेश में ५० बलात्कारों का प्रतिदिन होने का उल्लेख या 'योगी' अथवा 'अमितशाह' अथवा 'ममता बनर्जी' के प्रभाव वाले राज्यों में सैकड़ों भ्रष्ट व दुराचारियों के प्रतिदिन कथानक निःशंक छापते है पर संवैधानिक संरक्षण में पल रहे ऐसे लोग दिल्ली व देश के राज्यों की राजधानियों में खुलकर विचरण करते दीखते हैं। श्री गुलाम एस 'वाहनवती' मनमोहन सिंह सरकार के एटार्नी–जनरल नियुक्त होने के पहले एक राष्ट्रीय दैनिक में प्रति सप्ताह एक स्तम्भ लिखते थे। जिनमें उन्होंने कई सक्रिय नेताओं एवं पूर्ण न्यायाधीशों के नामों के साथ उनके ऊपर रिश्वत लेने, बलात्कारियों व आतंकवादियों को शह देने व उन्हें संरक्षण देने के आरोप लगाए थे। पर उनकी स्वतंत्र संज्ञान देना तो दूर उनका जिक्र करने पर भी एक नागरिक पर वे नेता करोड़ों की मानहानि का दावा करने की धमकी देते दिखाते हैं। चाहे देश की कार्यकारिणी का प्रधान हो। अथवा स्वयं राष्ट्रपति पद पर आसीन हों या वह व्यक्ति जो इस पद का प्रत्याशी हो अथवा न्यायपालिका का प्रमुख हो उसकी अक्षम्य भूलों संवैधानिक अभिलेखित गलतियों के लिए कटघरे में खड़ा किया जा सकता है। कुछ महत्वपूर्ण नागरिक व चर्चित पत्रकार भी जिनकी आत्म स्वीकृतियाँ आपराधिक प्रकृति की रही हैं और जो आज सक्रिय राजनीति में हैं उन पर भी नए सिरे से न्यायिक प्रक्रिया का शिकंजा कसा जाना चाहिए। वे खुलकर भीड़तंत्र की अराजकता पूर्ण धमकी के द्वारा न्यायपालिका को हतप्रभ कर चुके है जो अभी तक सिर्फ पाकिस्तान के तानाशाह व धर्मान्ध तत्व ही वहाँ की न्यायपालिका पर हर स्तर पर डालते रहे है।

यदि प्रसिद्ध पत्रकार व लेखक अपनी कृतियों एवं अभिलेखों की प्रतिकृतियों द्वारा विशेषकर 'द बिगेस्ट कवर अप' में प्रणव मुखर्जी की अक्षम्य भूलों के कारण उन पर 'महा अभियोग' के आरोपों की जांच की मांग कर सकते हैं तो कोई विस्मय की बात नहीं है। भारत विश्व में पहला देश होगा जहाँ यदि अमर नाथ यात्रा पर गए यात्रियों की आतंकवादी गोलियों से हर वर्ष भूनते रहें तो भी सरकार व सेना को हमारे जागरूक मीडिया के कर्णधार कटघरे में खड़ा करें पाकिस्तानी या देशी आतंकवादियों को नहीं। राहुल गांधी यदि चीन के राजदूत से वार्ता करने पहुंच जाँए और उसे गुप्त रखें और हमारे राष्ट्रद्रोही पाक परस्त मीडिया के कर्णधार उसे तर्क संगत माने तो हमारा देश किस प्रकार के पक्षाघात से ग्रस्त है इसका उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। आज अचानक सत्ता रूढ़ दल को और स्पष्ट शब्दों में नरेन्द्र मोदी को लगातार पत्रों के अग्रलेखों में साम्यवादी, कांग्रेसी व समाजवादी दलों द्वारा बताया जा रहा है कि वे महात्मा गाँधी से शिक्षा लें। अब तो अपना उल्लू सीधा करने के लिए हाहाकार करने वाला विरोधी वर्ग अटल बिहारी बाजपेयी जी का भी प्रशंसक बनकर अपनी बात कहने में उन्हें ही उद्घृत करता है। लालू परिवार के अपार घोटालें के बोझ के बल पर यदि आज नीतिश कुमार तक ने चेतावनी दे दी है कि यदि लालू तेजस्विनी के साथ साथ राबड़ी, पान, जलेबी और बहके हुए कुनबे के सदस्यों पर अंकुश नहीं लगाते है तब वे अपने स्तर पर कोई भी कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र है। लालू को बिहार का राबर्ट बाडरा कहा जाने लगा है और विरोधियों के चीत्कार के बावजूद उनके पापों का घड़ा फूटने जा रहा है। इजरायल से भारत की निकटता ने मोदी के पारम्परिक विरोधियों को विक्षिप्त बना दिया है और सेकुलरवादियों के यहूदी विरोध का कई दशकों बाद पहली बार भारत में पर्दाफाश हो रहा है। इसी प्रकार भारत में नए शीतयुद्ध की तैयारी भी हो रही है जिसमें ट्रम्प व योरोप के सभी दक्षिणपंथियों को अपशब्द कहे जाने में अगुवाई कांग्रेसी ही कर रहे है। राहुल गांधी और हाल में एक टी. वी. चैनल में एक सम्पादक को भारतीय राष्ट्र की अवधारणा पर भी पूरी रतह से दिग्भ्रमित सेवा ली वामपंथियों या सेकुलरवादियों के दिग्भ्रमित विचारों को ही दोहराने की कोशिश की है, वे मुलायम सिंह एंव अखिलेश के विशाल कुनबे तथा लालू, राबर्ट वाडरा, राबड़ी, पान देवी, जलेबी देनी व तेजस्विनी के राष्ट्रद्रोही ही विचारों को संरक्षण देने के लिए चाहे ममता बनर्जी हों या ओवैसी कुल हों उनके विचारों के बीच भिक्षु की तरह निर्लज्जता से लटकना जानते है। यह आधुनिक भारत के एक बड़े राजनीतिक दलों की अनोखी त्रासदी है।

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

आश्विन कृष्णपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनाँक
❖ पितरपक्षारम्भः, द्वितीया का श्राद्ध	१	वीरवार	०७.०६.२०१७
❖ भद्रा २१:५७ से विश्व साक्षरतादिवस, स०सि०अ०यो० १२:३० से, तृतीया श्राद्ध,	२	शुक्रवार	०८.०६.२०१७
❖ भद्रा ०३:१२ तक, पंचक समाप्त, ११:४२, चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०:४८, पन्तजयन्ती, चतुर्थी का श्राद्ध	३/४	शनिवार	०६.०६.२०१७
❖ माधवदेवतिथि (असम), स०सि०यो० १०:३६ तक, पंचमी का श्राद्ध, पंचमी क्षयः	४/५	रविवार	१०.०६.२०१७
❖ भद्रा २७:१५ से, षष्ठी का श्राद्ध, बिनोवाभावे जयन्ती, र०यो० ०६:२० से	६	सोमवार	११.०६.२०१७
❖ भद्रा १४:०८ तक, सप्तमी का श्राद्ध, सौभाग्यकसूचक रोहिणीव्रत, र०यो० ०७:५५ तक, स०सि०यो० ०७:५५ तक	७	मंगलवार	१२.०६.२०१७
❖ अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका व्रत, कालाष्टमी व्रत, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, सूर्य–सूर्य–स्त्री–पुरुष वर्मा वाहन मंडूक वर्षा हो, (द०भा०) स० सि० यो० २८:५६ तक	८	बुधवार	१३.०६.२०१७
❖ मातृनवमी, सौभाग्यवतीनांश्राद्ध, हिन्दी दिवस, स०सि०यो० २७:३५ से	६	वीरवार	१४.०६.२०१७
❖ भद्रा ०७:३५ से १८:३० तक, दशमी का श्राद्ध, इन्जीनियर्सडे, स०सि०यो० २६:१५ तक	१०	शुक्रवार	१५.०६.२०१७
❖ इन्दिराएकादशीव्रत सर्वेषां, एकादशी का श्राद्ध, रामबारात मेला आगरा, कन्या में सूर्य २४:४०, संक्रान्ति मु० ३०, बड़ व सौरमास आश्विन्यारम्भः	११	शनिवार	१६.०६.२०१७
❖ प्रदोषव्रत, सन्यासीनां द्वादशी का श्राद्ध, श्रीविश्वकर्मापूजा, तेजीमन्दीसूचकांक १३६५	१२/१३	रविवार	१७.०६.२०१७
❖ भद्रा १३:०८ से २४:३० तक, त्रयोदशी का श्राद्ध, मास शिवरात्रि	१३/१४	सोमवार	१८.०६.२०१७
❖ अन्वा, विषजलाग्नि शस्त्रादिदुर्मरण का श्राद्ध, सर्वपितृकार्येऽमा, देवी कात्यायनी जयन्ती	१४/३०	मंगलवार	१६.०६.२०१७
❖ इष्टि, देवकार्येऽमापुण्यः, मातामहश्राद्धं भूलेबिछुड़े पितर विसर्जजनम्, स० सि० यो० २३:०२ से	३०	बुधवार	२०.०६.२०१७

कैसे हो सशक्त भारत का निर्माण

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

दुनिया में हमारे देश भारत के समान शायद ही कोई ऐसा देश होगा जहां के नागरिक दशको से आतंक से उत्पीड़ित होते रहें, पिटते व मरते रहें फिर भी पाक प्रायोजित व संरक्षित आतंकवाद पर हमारे देश के सत्ता प्रतिष्ठानों में किसी प्रकार का रोष, प्रतिकार, संघर्ष व आक्रामकता का भाव ही नही जागे। परिणाम स्वरुप अत्याचारों को सहना आज हमारी विवशता बनती जा रही है। सन् १९४७ में कश्मीर की हजारो वर्ग किलोमीटर भूमि खो देने के बाद उस पर पुनः अधिकार पाने कि इच्छा शक्ति जुटाने में हम असफल रहें है। आज भी पाकिस्तान उस पर गैर कानूनी रुप से काबिज है और हमें शर्मसार करे हुए है। जबकि पूरी दुनिया को यह पता होना चाहिए कि कश्मीर हमारा अभिन्न अंग है।

वह कौन सी मानसिकता थी जो १९४७ में मुजफराबाद (पीओके) की ओर बढ़ती हुई सेनाओं को उडी में रोक देती है, जो १९६५ में लाहौर पर कब्जा नहीं करती बल्कि हाजीपीर व उड़ी–पुंछ आदि सेक्टर को वापसी पाने पर भी ताशकंद जैसे समझौतों में छोड़ देती है, जो १९७१ में बंग्ला देश तो बनवा देती है पर अपना कश्मीर का भाग वापस नहीं लेती और जो १९९९ में कारगिल की दुर्गम पहाड़ियें में अपनी सेना के सैकड़ो होनहार युवा अधिकारियों व सैनिकों के बलिदान होने पर भी हाथ आये शत्रु सैनिको पर प्रहार न करने के लिए विवश कर देती है। वह कौन सी सोच थी जब २००१ में संसद पर आतंकी हमला हुआ और उसके बाद आर–पार के युद्ध की ललकार के साथ सीमाओं पर सेना को तैनात कर दिया गया परंतु लगभग ११ माह बाद उनको बिना कुछ क्रिया किये वहां से वापस मार्च करवाने का निर्णय लिया गया? हम कब तक वार्ताओं के पटल पर हजारो सुरक्षाकर्मियों व नागरिको के बलिदानों को भूलते रहेंगे?

कब तक हम केवल सीमाओं पर अनगिनत सैनिको की लाशें उठाते रहें और आतंकी हमलो में मारे गए हजारो नागरिको का दाह–संस्कार के बाद निंदा व भर्तसना करके मोमबत्ती जला कर कैडल मार्च द्वारा अपना दायित्व निभाते रहे? क्या धैर्य की कोई सीमा नहीं होती? निरंतर रक्षात्मक नीतियों पर चल कर केवल वार्ताओं में ही समस्याओं का समाधान खोजने का एक तरफा प्रयास क्या सफल हो पायेगा? पड़ोसी देश से आदर्श मित्रता का अर्थ दोनों में सद्भाव बने और दोनों ही मित्रता के लिए प्रयास करे। अन्यथा मित्रता आत्मघाती होगी।

पिछले ३०–३५ वर्षो में सैकड़ो वार्ताओं में हमने कभी भी अपने खोये हुए कश्मीर (पीओके) की मांग नही करी, जबकि उसके लिए हमें कठोर व्यवहार करके उसे वापस अपने अधिकार में लेने के लिए गंभीर होना चाहिए था। हमारी इसी कमजोरी का लाभ उठा कर पाकिस्तान ने विभिन्न वार्ताओं के दौरान आतंकी हमले व युद्ध–विराम उल्लंघन करके हमारी पीठ में छुरा घौपने में कोई

कसर नहीं छोडी। हम कब तक पाकिस्तान को समझाने के लिए कागजो के बंडलों डोजियरों को भेज कर (२००८) मुम्बई व पठानकोट आदि आतंकी हमलो में पाकिस्तानियों की संलिप्ता के प्रमाण दे कर औपचारिकताओ का निर्वाह करते रहेंगे?

हमको परमाणु युद्ध की भयावहता की चिंता तो है पर हम यह नहीं सोचते कि दिन, प्रति, दिन आतंकी दहशत से तो छुटकारा मिलें और सीमाओं पर सैनिक के सिर कटने का सिलसिला तो थमे। जब पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री (जुल्फिकार अली भुट्टो) एक हजार वर्ष तक लड़ने की सोच रखते रहे और हमारे पूर्व प्रधानमंत्री (डॉ. मनमोहन सिंह) हजार घाव खा कर भी टूटेंगे नहीं की सोच, तो भी हम आक्रामक नहीं होते? हम क्यों बार–बार अपमानित होकर भी अमरीका आदि देशों के समक्ष पाकिस्तानी आघातों का रोना रोकर अपने बचाव के लिये गिड़गिडाते रहे? आत्मरक्षार्थ कीट–पतंगे भी पलटवार करते हैं, लेकिन सैकड़ो घाव झेलने के बाद भी हजार घावों को और झेलने पर भी शायद हमारे सत्ताधारी राजमद में सुस्त और मस्त रहें। क्या इस प्रकार लोकतंत्र के ढ़ोंग में हम अपनी कमजोरियां नही छिपा रहे?

इस लोकतांत्रिक व्यवस्था ने ऐसा वातावरण बना दिया है जिससे राजनैतिक, धार्मिक और जातीय धुर्वीकरण बढ़ जाने से पाकिस्तान व आतंकवाद के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने में सत्ताधारियों की कोई इच्छा ही नही दिखती? सत्ताओं ने राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय अस्मिता व राष्ट्रीय स्वाभिमान को मतदाताओं के सौदागरों की भेंट चढ़ा दिया है। जब तक राजनीति में कोई ठोस वैचारिक आदर्श नहीं होगा तब तक राष्ट्रीय नीति का आधार कैसे निर्मित होगा?

निसंदेह ऐसा सोचा जा सकता है कि हमारा राष्ट्र कमजोर शासन परंतु सशक्त समाज वाला राष्ट्र है जो राष्ट्रीय हितो के लिए अपनी क्षमताओं का सदुपयोग नहीं कर पा रहा। क्या हम आतंकवाद से नहीं लड़ सकते? क्या हम पाकिस्तान मे चल रहें आतंकियों के प्रशिक्षण केंद्रों को ध्वस्त नहीं कर सकते? क्या हम पाक द्वारा अवैध रुप से कब्जायें गए ७८११४ वर्ग किलोमीटर कश्मीरी क्षेत्र को पुनः पाने के लिए अपनी क्षमताओं का प्रयोग नहीं कर सकते? उसमें से पाक द्वारा चीन को ५१८० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र देने पर भी हमको लज्जा नहीं आती, जबकि हम यह भूलने को विवश हो रहें है कि कश्मीर के ३७५५५ वर्ग किलोमीटर भूभाग को चीन ने सन् १९६२ के युद्ध में जीता था और वह अभी भी उसके कब्जे में है।

क्या हम अमरीका द्वारा ऐबटाबाद (पाक) में मारे गए ओसामा के समान दाऊद इब्राहिम, अजहर मसूद व हाफिज सईद आदि मोस्ट वांटेड आतंकियों को नहीं मार सकते? ध्यान रहे एक बार हमारे जनरल वी. के. सिंह (जो आज केंद्रीय सरकार में राज्य मंत्री है) ने कहा था कि हमारी सेनायें ऐबटाबाद जैसी कार्यवाही करने में सक्षम है, पर क्या हम अपनी सक्षमता का उपयोग करने की इच्छाशक्ति रखते है? इस सत्य को छुपाया नहीं जा सकता कि सेनायें उतनी ही शक्तिशाली होती है जितनी हमारी राजनैतिक इच्छा शक्ति। परंतु सेनायें सत्ताधारियों के निर्देशो का पालन करने को बाध्य होती है, तभी वे शत्रुओं द्वारा अपने साथियों के सिर काटे जाने जैसे जघन्य काण्डों का भी बदला लेने के लिये क्रोध और आंसुओं के घूंट पीने को विवश होते है। ऐसी आत्मघाती और नपुंसक रणनीति कौन सी सैन्य नीति का भाग है।

आज भारत की जनता आंतरिक सुरक्षा के साथ साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान के साथ जीना चाहती है। वे अस्थिरता की ओर बढ़ रहें पाकिस्तान की हेकडी से आहत है। उसे अपना खोया हुआ कश्मीर चाहिये, चाहे उसके लिए युद्ध छिड़ जाये पर नित्य होने वाले झगड़ों से तो निपटारा होगा। जब हमारा संविधान का अनुच्छेद ३५५ सभी नागरिकों की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा की गारंटी देता है तो सरकार को अपना दायित्व निभाने में कैसा संकोच? राष्ट्रवादियों ने राष्ट्र के सम्मान की रक्षा के लिए ही तो श्री नरेंद मोदी की आक्रामकता को ध्यान में रखकर उन्हें अपने देश का प्रधानमंत्री चुना था। दो वर्षो से जिस आक्रामकता की मोदी जी से आशा व प्रतीक्षा थी उसका सन्देश ७० वें स्वतंत्रता दिवस पर सुनने को मिला। अब उसे सार्थक करके भारत की साट स्टेट की धूमिल छवि को हटा कर भारतीय स्वाभिमान को जगाना होगा।

भारत के पास प्रचंड सामर्थ्य है, सेनाओं में पराक्रम की कोई कमी नहीं एवं राष्ट्रवादियों में मातृभूमि के लिए कुछ कर गुजरने का उत्साह किसी आह्वान की प्रतीक्षा में अधीर हो रहा है। जबकि पाकिस्तान आंतरिक रुप से टूट चुका है और अमरीकी डॉलर व चीन के दम पर पल रहा है। ऐसे में शीर्षसन पर बैठे मोदी जी को अब आँखों में आँखे डाल कर बातें करने के स्थान पर पूरी रुपरेखा के अनुसार शेष कश्मीर को वापस पाने व आयतित आतंकवाद (पाकिस्तान आदि द्वारा निर्यात) को समाप्त करने के लिए आक्रामक नीतियां अपनानी होगी। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण निर्णय भी आवश्यक है जैसे पाकिस्तान को मोस्ट फेवरेट नेशन (MFN) न माना जाय और समझौता एक्सप्रेस, दिल्ली–लाहौर बस सेवा व अन्य जितने भी भारत–पाक यात्रा के रेल व सड़क मार्ग है सभी को प्रतिबंधित कर दिया जाना चाहिये। सांस्कृतिक, फिल्मी व खेल आदि के नाम पर आये हुए सभी पाकिस्तानियों को निसंकोच देश से निकाला जाये और भविष्य के लिए इस पर भी प्रतिबंध लगें। भारत की सम्पूर्ण सीमाओं पर घुसपैठियों व आतंकियों को रोकने के प्रभावी उपाय किये जाए। सीमा क्षेत्रों में अवैध मस्जिद व मदरसो पर न्यायायिक कार्यवाही करके उनको ध्वस्त किया जाये। देश में सरकार द्वारा घोषित ६० मुस्लिम बहुल जिलों में ही पिछले ३० वर्षो के पुलिस व गुप्तचर विभागों के अभिलेखों का ब्यौरा (रिकार्डस) देखें तो उसमें नकली करेंसी, अवैध

शेष पृष्ठ 11 पर

हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

इस्लाम में महिलाओं की दयनीय स्थिति

इस्लाम में विचार की कोई स्वतन्त्रता नहीं होती है। कुरान, हदीस, हिदाया और सीरत–अल–नबी से प्राप्त निर्देशों, विचारों और भावनाओं से बाहर निकाल कर विचार व्यक्त करना मुसलमानों के लिए वर्जित है। यही कारण है कि दुनिया के सभी मुस्लिम देश कट्टरता के साथ अपने मजहबी निर्देशों से बंधे होते हैं और स्वतंत्र, आधुनिक, विकसित, तर्कसंगत, न्यायप्रिय एवं नैतिक आदर्शों के साथ नहीं चल पाते हैं। औरतों के अधिकारों को मध्ययुगीन बुर्कों में कैद कर मानवीय अधिकारों का घोर उल्लंघन करते हैं। ४–४ शादियों की छूट, मनमाना तलाक का अधिकार और जेहाद द्वारा प्राप्त गैर–मुसलमानों की औरतों (लौंडी) को रखैल रखना और उनसे बलात्कार करना उनके मजहब द्वारा स्वीकृत विधान है।

इस्लाम में औरत को गुलाम से बदतर समझा जाता है। वह घर में कैदी की तरह व बुरके में बंद रहकर खुली हवा को भी तररसी है। औरतों के इस काले घूँघट का नाम भी ऊटपटाँग ही हैं। यह कपड़ा है तो 'सर का', नाम है 'बुर का'। इस विचित्र भाषा को बोलने में भी शर्म महसूस होती हैं।

इस्लाम में 'मुता' की विचित्र प्रथा

इस्लाम में 'मुता' नाम से एक प्रथा चालू है। किसी भी स्त्री को थोड़े समय के लिये कुछ घन्टों या दिनों के लिये बीबी बना लेना और उससे विषयभोग करना तथा फिर सम्बन्ध विच्छेद करके त्याग देना 'मुता' कहलाता है।

यह इस्लाम का मजहबी रिवाज है। अययाशी के लिये मुता करने पर औरत उस मर्द से अपनी मेहर (विवाह की ठहरौती की रकम) या (फीस) मांगने की भी हकदार नहीं होती है।

यदि मुता के दिनों व घन्टों में विषयभोग करने से उस स्त्री को गर्भ रह जाते तो उसकी उस मर्द पर कोई जिम्मेदारी नहीं होती है। कोई भी औरत कितने ही मर्दों से मुता करा सकती है या एक मर्द कितनी ही औरतों से मुता कर सकता है, उसकी कोई हद (सीमा) इस्लाम में निश्चिम नहीं है। इससे स्पष्ट है कि –'इस्लाम में नारी का महत्त्व केवल पुरुष की पाशविक वासनाओं की पूर्ति करना मात्र है।'

'मुता के समर्थन में एक कथा–हदीस नं० ६६२ पृ० ३३२ पर निम्नवत् है। हजरत आयशा फरमाती हैं कि – "रफाअकुरती की औरत रसूल्लाह सलालेहू वलैहिअसल्लम (मुहम्मद साहब) की खिदमत में हाजिर हुई और अर्ज किया कि मैं रफाअ के पास (यानी उसके निकाह में) थी। उसने मुझे तीन तलाक दे दी उसके बाद मैंने अब्दुल रहमान बिन जबीर से निकाह कर लिया। परन्तु उसका (लिंग) कपड़े के फुन्दने की तरह है। यानी उसका ऐजातमासुल ढीला और नरम है।

तब आपने फरमाया! "क्या तू रफाअ के पास फिर जाना चाहती है? हाँ हजूर! नहीं (तू नहीं जा सकती) जब तक तू अब्दुलरहमान बिन जबीर का शहद न चख लें"।

गैर-मुसलमानों (दुश्मन) की औरतों (लौंडी) से व्यभिचार की स्वीकृति

दुश्मन की औरतों (लौंडी) को व्यभिचार के लिये पकड़ लाने की स्वीकृति कुरान देता है।

ऐसी औरतें जिनका खाविन्द जिन्दा हो, उनको लेना हराम है, मगर जो कैद होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिये तुमको खुदा का हुक्म है और उनके सिवाय भी अन्य दूसरी सब औरतें हलाल हैं जिनको तुम मालो अस्बाब देकर कैद से लाना चाहो, न कि मस्ती निकालने के लिए। (कु० ४:२४)

लौंडी को विक्रय की स्वीकृति

लौंडियों के बारे में पुस्तक रियाजुस्सालिहीन के पृष्ठ १४१ पर लिखा है कि अबूहुरैरा (हजरत) से रवायत है– "रसूलल्लाह' सलाल्लेहू वलैहीअसलम' हजूरे पाक से रवायत है कि जब लौंडी बदकारी करे और उसके उस फेल (कर्म) की तहकीकात हो जावे तो उसको हद (बन्दिश) लगाई जावे और डांट फटकार न की जावे फिर अगर दुबारा उससे यह फेल सरजद हो तो दोबारा उसकी हद लगाई जावे और जज (डांट फटकार) व तौबीख (झिड़कना) न की जावे। अगर तीसरी बार फिर यही अमर करे ता उसे बेच डाले। ख्वाह बाल की रस्सी के मुआवजे में।"

एक व्यवस्था व्यभिचार के समर्थन में

...और तुम्हारी लौंडिया (रखैल) जो पाक रहना चाहती हैं उनको दुनिया की जिन्दगी के फायदे की गरज से हरामकारी पर मजबूर न करो, और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये जाने के पीछे सबको क्षमा करने वाला मेहरबान और दयावान है। (कु० २४:३३)

फिर जिन औरतों से तुमने लुत्फ अर्थात् मजा उठाया हो तो शेष पृष्ठ 11 पर

मोदी सरकार द्वारा किए गए अनुचित कार्य (मई-जुलाई २०१७)

१. ११६६ पाकिस्तानी नागरिकों को एक साथ भारत की नागरिकता दे दी। यह घोर निन्दनीय कार्य हैं क्योंकि पाकिस्तान ६६–७० वर्षों से कश्मीरियों पर गोले–बम बरसा रहा है और अब छात्र–छात्राओं से सुरक्षा बलों पर पत्थर फिकवा रहा है।

२. मोदी सरकार ने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि पाकिस्तानियों को नागरिकता देने में उदारता से कार्य किए जाएं।

–हम मांग करते हैं कि दुश्मन के किसी भी नागरिक को नागरिकता नहीं दी जाएं क्योंकि यहां रहकर मुस्लिमों का ही साथ देंगे।

३. यदि ये पाकिस्तानी नागरिक हिन्दू हैं और वहां से दुखी होकर आए हैं तो इन्हें नागरिकता अवश्य दी जाए और मोदी सरकार बधाई की पात्र है।

४. कई वर्षों से, जम्मू–कश्मीर सरकार, अलगाववादियों –पाकिस्तान समर्थक नेताओं–सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की सुरक्षा तथा अन्य सुविधाओं पर प्रति वर्ष १०० करोड़ रुपए व्यय कर रही है। पी० डी० पी०–भाजपा सरकार भी इतनी राशि क्यों व्यय कर रही है? यह राशि बन्द की जानी चाहिए।

५. अनेक राज्यों में किसान आत्म हत्याएँ कर रहे हैं क्योंकि बैंक का या साहूकार का कर्ज व ब्याज लौटाने में वह सक्षम नहीं हैं।

६. मोदी सरकार ने भी किसानों का कर्ज माफ करने का वायदा किया था लेकिन राज्य सरकारों के कर्ज माफी के पत्र बैंकों के पास अभी तक नहीं पहुंचे हैं।

७. किसान द्वारा उत्पादित अनाज–सब्जी–फल–दाल आदि कम मूल्य पर बिक रहे हैं। इससे किसानों को लागत मूल्य ही मिल रहा है। जब लाभ नहीं मिलता है तो उसे कर्ज लेना पड़ता है इसलिए सरकार को किसान द्वारा उत्पादित हर वस्तु का न्यूनतम समर्थन मूल्य निश्चित करना चाहिए ताकि उसको माल बेचने में उचित लाभ भी मिले।

८. उचित मूल्य न मिलने पर किसानों ने विरोध स्वरूप आलू–प्याज मौसमी–पपीता आदि सड़कों पर फेंक दिए और सरकार मूक दर्शक बनी रही।

६. हिन्दू विरोधी ममता बनर्जी ने दार्जलिंग के २५० वर्ष पुराने मन्दिर की कमेटी का अध्यक्ष जानबूझ कर एक मुस्लिम मंत्री को मनोनीत कर दिया जिसके विरोध में दार्जलिंग के बाजार बन्द रहे।

१०. २६–२७ जून को मोदी अमेरिका में राष्ट्रपति ट्रंप से पहली बार मिले। आशा यह की जा रही थी कि ट्रंप,पी० ओ० के० में मौजूद आतंकवादी शिविरों को नष्ट करने के लिए, हवाई जहाज से ड्रोन हमले करने का आदेश देंगे किन्तु मोदी ऐसा नहीं करा सके।

११. मोदी सरकार सरकारी कर्मचारियों को पदोन्नति में भी आरक्षण देने की समर्थक है और उसी के अनुसार कार्य कर रही है जबकि स्वर्ण पदोन्नति में आरक्षण के प्रबल विरोधी हैं।

१२. राष्ट्रीय राजमार्गों पर शराब की दुकानें नहीं होने के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखते हुए उत्तराखण्ड की भाजपा सरकार ने अंग्रेजी और देसी शराब की बिक्री मोबाइल वैनों से करनी शुरु करा दी है। यह जानकारी आज तक चैनल ने १–७–२०१७ को दी है। इसे होम डिलीवरी कह सकते हैं।

❖ उत्तराखण्ड को देव भूमि कहते हैं। यहां तो गुजरात–बिहार की भांति पूरे राज्य में शराब बन्दी होनी चाहिए थी। ❖ भाजपा जब गुजरात में शराब बन्दी कर सकती है तो फिर उत्तराखण्ड में क्यों नहीं? ❖ भाजपा का दोहरा आचरण निन्दनीय है।

काली चरण आर्य, कार्य वाहक अध्यक्ष, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

हुर्रियत कान्फ्रेंस के नेताओं की गिरफ्तारी

✍ डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

(पिछले अंक का शेष)

अब अलगाववादियों ने लड़ाई का दूसरा मोर्चा खोला। इस बार लड़ाई और गंभीर हो गई थी। पत्थर मारने वालों को विशेष रुप से तैयार किया गया। रणनीति भी बदली गई। सेना और सुरक्षा बलों पर सार्वजनिक स्थानों पर हमले शुरु हुए। पुलिस वालों के घरों में घुस कर उनके परिवारों पर हमले शुरु हुए। आजकल कश्मीर घाटी में जो हो रहा है यह उसी दूसरी रणनीति का हिस्सा है। पत्थर मारने वालों की लड़ाई कश्मीर घाटी के महाविद्यालयों तक पहुँचाई गई है। दक्षिणी कश्मीर के कुछ महाविद्यालयों में वहाँ के छात्रों ने सुरक्षा बलों पर पत्थर बरसा। एक दो जगह तो लड़कियों के कालिज में भी पत्थरबाजी की यह घटना हुई। कुछ बैंकों को लूटा गया। कुछ जगह घाटी के राजनैतिक दलों मसलन नैशनल कान्फ्रेंस, पीडीपी, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं पर आक्रमण किया गया। इस आक्रमण में कुछ लोग मारे भी गए। यह कश्मीर घाटी के अन्दर की लड़ाई है। इस अन्दर की लड़ाई में भी जब कभी आतंकवादी सुरक्षाबलों के घेरे में आ जाते हैं तो मुठभेड़ शुरु होती है। लेकिन सुरक्षा बलों का ध्यान बँटाने के लिए पत्थरबाजों के गिरोह उसी मौके पर सुरक्षा बलों पर पत्थर बरसाते हैं। सुरक्षा बलों का ध्यान बँटते देख आतंकवादी कई बार भागने में कामयाब हो जाते हैं। पहली लड़ाई हड़ताल की थी और उसके बाद अब उसी लड़ाई का नया मोर्चा, आक्रमण का है। आक्रमण की लड़ाई क्योंकि प्रत्यक्ष दिखाई पड़ रही है, इसलिए उसकी चर्चा भी सबसे ज्यादा हो रही है। सुरक्षा बलों पर पत्थर पडते देख कर कर कश्मीर घाटी के विशेषज्ञ कभी कभी निराश भी होने लगते हैं। उनके अनुसार घाटी सरकार के हाथ से निकलती जा रही है। लोग सुरक्षा बलों से भिड़ने के लिए सड़कों पर निकल आए हैं। घाटी के लोगों ने भारत को रिजैक्ट कर दिया है। यह जल्दी निष्कर्ष निकाल लेना होगा। लेकिन सबसे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि घाटी के प्रमुख राजनैतिक दल अपने क्षणिक लाभ के लिए, इस स्थिति का लाभ लेते हैं और उसे हवा भी देने लगते हैं। कश्मीर घाटी में जब अलगाववादी पहली लड़ाई हारने के बाद दूसरी लडाई लड़ रहे हैं, तो नैशनल कान्फ्रेंस के फारुक अब्दुल्ला भी इसी मोर्चे में शामिल हो गए और पत्थरबाजों का समर्थन करने लगे और अपने लाभ के लिए सोनिया कांग्रेस भी अन्ततः अब्दुल्ला परिवार के पक्ष में ही खड़ी हो गई। अब्दुल्ला परिवार अब पत्थर फेंकने वालों और अलगाववादियों को आजादी के लिए लड़ रहे बहादुर बताने लगा है। इसका उसे क्षणिक लाभ

भी हुआ है। श्रीनगर की लोकसभा सीट के लिए हुए उपचुनाव में फारुक अब्दुल्ला जीत गए हैं। इससे उत्साहित होकर वे सीधे सीधे मैदान में निकल आए हैं। उनका कहना है सुकमा में पच्चीस जवान शहीद हुए नक्सलवादियों से लड़ते शहीद हुए, उसकी बात कोई नहीं करता लेकिन कश्मीर घाटी में तीन सैनिक शहीद हो गए तो सारे देश में बबाल मचाया जा रहा है। वैसे अब्दुल्ला ने शहादत शब्द का प्रयोग नहीं किया, उन्होंने सैनिक मारे गए ही कहा। अब्दुल्ला का मानना है कि यह सब मुसलमानों को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है। लेकिन कश्मीर घाटी के अन्दर और बाहर जो हो रहा है उसमें आपस में पूरा तालमेल है। बाहर से सीमा पर सीमा का उल्लंघन पाकिस्तान की सेना निरंतर कर रही है। उससे घाटी के अन्दर पत्थरबाजी करने वालों का उत्साहवर्धन तो होता ही है साथ ही उनमें आशा का संचार होता है कि शायद घाटी में भारत लड़ाई हार जाएगा। दो भारतीय सैनिकों के शवों को विकृत करना इसी मानसिकता की उपज है।

लेकिन अलगाववादियों की इस दूसरी लड़ाई में कश्मीर घाटी के कितने लोग शामिल हैं, यह प्रश्न सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। सूबे की मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती कहती हैं कि वे पाँच प्रतिशत से ज्यादा नहीं हो सकते। मुझे लगता है कि वे ठीक ही कहती हैं। लेकिन जो पाँच प्रतिशत लोग इन कामों में शामिल हैं, वे मुखर हैं। उनका प्रदर्शन सड़कों पर दिखाई देता है। उनकी गोलियों से और पत्थरों से सुरक्षा बल के जो लोग घायल होते हैं या मारे जाते हैं, उसकी खबर चौबीस घंटे चलती है। इन सभी बातों का मनोवैज्ञानिक असर होता है। दूर से देखने वाले को लगता है कि घाटी हाथ से निकल रही है। पाकिस्तान भी और घाटी के अन्दर काम करने वाले उसके साथी भी यह सारा खेल दूर के दर्शकों को ही दिखाना चाहते हैं। दूर से खेल देख रहे देश, समय पाकर कह सकते हैं कि इस विवाद को सुलझाने के लिए वे अपनी सेवाएँ देने के लिए तैयार हैं। सेवाएँ देने की ऐसी जल्दबाजी कुछ देशों ने दिखाई भी है। पीछे तुर्की के प्रधानमंत्री भी इस कार्य के लिए तत्पर नजर आने लगे थे। हल्की भाषा में अमेरिका भी आगे आया था।

घाटी के भीतर अब्दुल्ला परिवार किसी भी तरह फिर आतंकवादियों व अलगाववादियों का विश्वास जीतना चाहता है। उसकी रुचि भी घाटी में फैल रहे उपद्रवों में बढ़ती जा रही है। अब्दुल्ला परिवार की इच्छा है कि किसी भी तरह केन्द्र सरकार राज्य में राष्ट्रपति राज लागू कर दे। नैशनल कान्फ्रेंस की दुश्मन नम्बर एक पीडीपी है। उसके लिए वह राष्ट्रपति राज के लिए भी तैयार है। लेकिन जैसा महबूबा मुफ्ती ने कहा है कि अलगाववादियों की हरकतें घाटी के दस जिलों में दक्षिणी कश्मीर के केवल दो तीन जिलों तक सीमित है।

दरअसल घाटी के कश्मीरियों का विश्वास भारत में खत्म नहीं हुआ है बल्कि उनका विश्वास वर्तमान सिस्टम से उठ गया है। कश्मीर घाटी में भ्रष्टाचार इतना ज्यादा है जितना देश में शायद और कहीं न हो। केन्द्र से जितना पैसा आता है, घाटी के कुछ अरब–ईरानी परिवार ही ईमानदारी से आपस में मिलकर बाँट खा लेते हैं। जनता तक वह पैसा नहीं पहुँचता है। श्रीनगर से बाहर विकास के नाम पर कुछ नहीं है। इसलिए आम लोगों के मन में सिस्टम के प्रति पिछले छह सात दशकों से गुस्सा बढ़ता गया है और अन्ततः वह निराशा में बदल गया है। उस निराशा के क्षणों में अलगाववादी उनके हाथ में पत्थर दे देते हैं। बहुत लोगों को ध्यान में होगा कि जिन दिनों जम्मू कश्मीर में जगदेव राज्यपाल थे तो उन्होंने कश्मीर घाटी में भी सुशासन की ओर काम करना शुरु कर दिया था। उससे आम जनता को विश्वास होने लगा था कि उनके लिए भी घाटी में कुछ करने की आशा है। लेकिन इससे वहाँ के सभी राजनैतिक दलों को खतरा पैदा हो गया कि वे घाटी में अप्रासांगिक हो जाएँगे या फिर उन्हें भी स्वयं अपनी दिशा बदलनी होगी। अलगाववादियों के अस्तित्व के लिए ही खतरा पैदा हो गया था। जगमोहन का विरोध करने वाले भी यही दल थे और सड़कों पर जगमोहन मुर्दाबाद का नारा लगाने वाले भी वही लोग थे जिनके बच्चे आज पत्थर मार रहे हैं। उनकी संख्या और चेहरे लगभग वही हैं। आज भी वही स्थिति है। अलगाववादियों का समर्थन करने वाले आज भी उतने हैं। लेकिन वे चिल्लाते जोर से हैं इसलिए सारे देश में सुनाई पड़ते हैं। वर्तमान सरकार यदि सुशासन ला पाती है तो यह चिल्लाहट स्वयं बन्द हो जाएगी। तब कश्मीर की आम जनता सरकार के साथ होगी। अलगाववादी और पत्थरबादी अपने आप अलग थलग पड़ जाएँगे।

मरो-मरो परन्तु यों मरो.....

मरो–मरो परन्तु यों मरो कि मरना तुम्हारा
निज राष्ट्र के काम आये
मरना तुम्हारा सार्थक हो जाये।।
करो–करो कुछ ऐसा करो कि करना तुम्हारा
निज राष्ट्र को समृद्ध बना जये
करना तुम्हारा सार्थक हो जाये।।
लड़ों–लड़ों परन्तु यों लड़ों कि लड़ना तुम्हारा
निज राष्ट्र की रक्षा कर जाये
लड़ना तुम्हारा वीरता कहलाये।।
बनो–बनो कुछ ऐसा बनो कि बनना तुम्हारा
निज राष्ट्र का विकास हो जाये
बनना तुम्हारा सार्थक हो जाये।।
निभाओ–निभाओ कि निभाना तुम्हारा
निज राष्ट्र को समर्पित फर्ज कहलाये
निभाना तुम्हारी वफादारी बन जाये।।
मरो–मरो परन्तु यों मरो कि मरना तुम्हारा
निज राष्ट्र के काम आये
मरना तुम्हारा सार्थक हो जाये।।

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु जी,
माननीय रेल मंत्री, भारत सरकार
रेल भवन, नई दिल्ली–११०००१

विषय :- भारतीय रेल खानपान एवं पर्यटन निगम लिमिटेड (आई.आर.सी.टी.सी.) के कामकाज में हिंदी की उपेक्षा।

महोदय,

गृह मंत्रालय, भारत सरकार के आदेशों के अनुसार यह आवश्यक किया गया है कि सरकारी उपक्रमों, कार्यालयों आदि के नाम भारतीय/हिंदी में रखे जाएँ, इसके विपरीत भारतीय रेल की खानपान एवं पर्यटन निगम का नाम अंग्रेजी में रखा गया है, जोकि आपत्तिजनक है। भारत संचार निगम, महानगर टेलीफोन निगम आदि की तरह यह नाम हिंदी में/भारतीय रूप में होना चाहिए। इसमें संशोधन कराने की कृपा करें।

उक्त निगम द्वारा ई–मेल टिकट विवरण हिंदी में भी प्राप्त होना चाहिए, मुद्रित टिकट पर यात्री का नाम, गाड़ी का नाम आरक्षण का प्रकार और श्रेणी आदि हिंदी में दी जानी चाहिए जैसे कि भारतीय रेल द्वारा प्रशंसनीय कार्य करके सारे देश में आरक्षण चार्ट हिंदी में भी प्रकाशित होते हैं।

बीमा पालिसी का ई–मेल, उसका प्रलेख और लघु संदेश भी हिंदी में भेजे जाने चाहिए।

कम्प्यूटर से दी जा रही सभी सेवाएँ एवं एप (App) हिंदी में भी होने चाहिए। विश्वास है कि जिस प्रकार भारतीय रेल को राष्ट्रपति जी ने हिंदी प्रयोग के लिए सम्मानित किया है, उस सम्मान की गरिमा रखते हुए उपरिलिखित सब कार्य इस वर्ष संवत् २०७४ विक्रमी में हिंदी में हो जाएँगे । इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	**(मुन्ना कुमार शर्मा)**	**(वीरेश त्यागी)**
राष्ट्रीय अध्यक्ष	**राष्ट्रीय महासचिव**	**राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री**

प्रतिष्ठा में,
श्रीमती सुषमा स्वराज जी
माननीया विदेश मंत्री, भारत सरकार
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली–११००११

विषय : १. पासपोर्ट कार्यालयों में और वेबसाइट पर आनलाइन फार्म द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी में) उपलब्ध कराने हेतु।

२. विदेश मंत्रालय में कोड मैन्युअलधनियम पुस्तकों प्रक्रिया साहित्य कानन फार्मो आदि का हिंदी में अनुवाद कराकर द्विभाषी रूप (हिंदी और संग्रेज अंग्रेजी) में उपलब्ध कराए जाने हेतु।

महोदय,

कम्प्यूटरों द्वारा दी जाने वाली व्यवस्थाओं में पार–पत्रों (Passport) के फार्म आदि अब हिंदी में सुलभ नहीं होते जबकि राजभाषा नियमावली १९७६ के नियम ११ के अनुसार सब फार्म आदि सहित सब कार्यालयों, विभागों, उपक्रमों आदि का सब प्रक्रिया संबंधी साहित्य हिंदी में भी सुलभ होना अनिवार्य है। इसके साथ–साथ सभी भारतीय दूतावासों की वेबसाइटें हिंदी में भी अवश्य होनी चाहिएँ। हिंदी में भरे गए पार–पत्र के फार्म अब स्वीकार नहीं किए जाते, यह भारत संघ की राजभाषा हिंदी का अपमान है और साथ–साथ देश की जनता का भी अपमान है। नियमों का उल्लंघन तो है ही। अतः विश्वास है कि उपर्युक्त स्थिति आपके हस्तक्षेप से शीघ्र बदलेगी। सभी मिशनों दूतावासों की नियम पुस्तकें, फार्म, टेलीफोन निर्देशिकाएँ और अन्य साहित्य द्विभाषिक रूप में सुलभ होना चाहिए। इसकी भी जाँच कराने की कृपा करें। इस संबंध में की गई कार्यवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	**(मुन्ना कुमार शर्मा)**	**(वीरेश त्यागी)**
राष्ट्रीय अध्यक्ष	**राष्ट्रीय महासचिव**	**राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री**

रात्रि बजार लगा तो गम्भीर अपराधों से इन्कार नहीं–हिन्दू महासभा

हिन्दू महासभा ने पुलिस अधीक्षक को दिया ज्ञापन, जिलाधीश को देंगे खून से छिड़का ज्ञापन १० को बजार लगा तो होगा आन्दोलन

ग्वालियर। शासन और प्रशासन स्मार्ट सिटी के नाम पर महाराज वाड़ा और आस पास बजार लगाने के प्रस्ताव का कड़ा विरोध करते हुए २ अगस्त को पुलिस अधीक्षक महोदय को ज्ञापन सौंपा। इस पर अखिल भारत हिन्दू महासभा के प्रदेश संयोजक मोहन लाल वर्मा ने कहा कि जब दिन के भरे बजार में लूट मार, महिलाओं–छात्राओं के साथ छेड़ खानी, हत्यायें, जेब कटी यहाँ तक बैंकों के आस पास लूट की घटनाएं पर रोक लगाने में पुलिस सक्षम नहीं तो सारे बाजार रात को लगाने की घोषणा और कर लगने पर गम्भीर अपराधों की घटनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता। वर्मा ने घोषणा की १० अगस्त को सारे बजार लगाने में जिलाधीश को चर्चा कर उन्हें खून से छिड़का ज्ञापन दिये जाने की घोषणा की इसके बाद भी प्रशासन रात्रि बजार लगाया गया जिला ईकाई आन्दोलन के अगले चरण की घोषणा को मजबूर होंगे। आन्दोलन की जवाब देही शासन और प्रशासन की होगी। ज्ञापन में प्रान्तीय संयोजक मोहन लाल वर्मा, जिला संयोजक लीला शाक्य, राकेश शर्मा, राजू अहिरवार, नत्थी लाल, विक्रम भगत, उत्तम चकौदिया सहित अनेक कार्यकर्ता गण शामिल थे।

शेष पृष्ठ 12 का **नारी सशक्तिकरण........**

राजनीतिक व सामाजिक सशक्तिकरण का आधार है। यजुर्वेद के 'आ ब्रह्मन ब्राह्मणे...' मंत्र में नारी को राष्ट्र का आधार कहा गया है तथा उससे बलवान, सभ्य व सुयोग्य याज्ञिक संतान की अभिलाषा की गई है। कालांतर में विसंगति देखिए कि वन्दनीया मातृशक्ति पाशुविक तथा अमानवीय अत्याचारों का शिकार हुई, उसे 'नारी नरक का द्वार', 'पैरों की जूती', 'विलासिता की वस्तु', 'बेजान वस्तु' आदि के रूप में भी प्रचारित किया गया है, यही नहीं, कहना न होगा कि प्राचीन युग की महान, विदुषी, शास्त्र, राजनीति, दर्शन व प्रशासन आदि में प्रवीण यह नारी शक्ति अधःपतन की शिकार हो गई। आज कन्याभ्रूण हत्या, बलात्कार व नग्नता जैसी कुत्सित प्रवृत्तियों ने नारी सशक्तिकरण को एक बड़ी चुनौती भी दी है, जिसके विरूद्ध जनजागृति अपेक्षित है। नारी अस्मिताा, गौरव व वैभव की रक्षा के लिए आज अनेकानेक सांविधानिक प्रावधान किए गए हैं, किन्तु इनके ईमानदारी से क्रियान्वयन की अपेक्षा है। मानवाधिकार व उनके संरक्षण की व्यवस्था है, किन्तु इस दिशा में एक वातावरण विकसित करने की आवश्यकता है। यह सही है कि आज वन्दनीय मातृशक्ति देश–विदेश में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व प्रशासनिक सभी दृष्टियों से सशक्त है तथापि समाज में नारियों के प्रति जो उत्पीड़नात्मक रवैया है उसे भी कदापि नजरअंदाज नहीं क्रिया जा सकता। ऐसे में वस्तुतः आज भी नारी–जागृति, नारी–मुक्ति व नारी–अधिकार की दिशा में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत आर्य समाज के सशक्त आन्दोलन की प्रबल आवश्यकता है।

शेष पृष्ठ 2 का **माइग्रेन को हलके में नहीं........**

हो माइग्रेन के रोगी को सुबह सूर्योदय से पहले उठना चाहिए। सुबह जल्दी उठने के लिए जरूरी है कि रात को जल्दी सोया जाए। चाकलेट और शराब के सेवन पर लगाम लगाना भी जरूरी है। इस दर्द के भावनात्मक कारण भी हो सकते हैं अतः जहाँ तक हो सके खुशमिजाज बने रहें। वे महिलाएँ जो गर्भनिरोधक गोलियों का सेवन करती हैं उन्हें इनका सेवन नियंत्रित तरीके से डॉक्टर की देखरेख में करना चाहिए अन्यथा वे भी माइग्रेन की शिकार हो सकती हैं।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 8 का **हिन्दू अस्तित्व, संकट......**

उनसे जो (धन या फीस) ठहरी थी उनके हवाले करो, ठहराये पीछे आपस में राज़ी होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं। अल्लाह जानकार और हिकमत वाला है। (सूरत निसा आयत २४)

खुदाई इन्साफ

"ए ईमान वालों (मुसलमानों) जो लोग मारे जावें, उनमें तुमको (जान के) बदले जान का हुक्म दिया जाता है। आजाद के बदले आजाद और गुलाम के बदले गुलाम तथा औरत के बदले औरत....का हुक्म दिया जाता है। (कु० २:१७८)

इसमें खुदा ने हुक्म दिया है कि – "अगर कोई गुण्डा किसी भले आदमी की औरत से जिना बिलजब्र (बलात्कार) कर डाले तो उस शरीफ आदमी को चाहिये कि वह भी उस गुण्डे की शरीफ औरत से बलात्कार करे।"

लौंडी को गिरवी रखना

"अगर कोई शख्स अपनी लौंडी (रखैल) को किसी के पास गिरवी रख दे और गिरवी रखने वाला उससे जिना व्यभिचार करे तो उस पर कोई शरायत (शर्त) लागू नहीं, अगर्चे वह जानता भी हो कि यह लौंडी मुझ पर हराम है। "(हिदायहमुतरज्जिम फारसी जिल्द १ हदीस ३०२ व ३०३) अपनी लौंडी को जिना की बिना पर (जहर देकर) मार डालना दुरुस्त है। (फतावी खजानतह अलवायत पृष्ठ ४१७)

बांदियों से जिना (सम्भोग) करना जायज है

ऐ पैगम्बर! इस वक्त के बाद से ....दूसरी औरतें तुमको दुरुस्त नहीं और न यह कि उनको बदल कर दूसरी बीबी कर लो। अगर्चे उनकी खूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यों न लगे। मगर बांदिया (और भी आ सकती हैं) और अल्लाह कर चीज को देखने वाला है (कु० ३३:५२)

ईरान में यदि किसी महिला ने कोई ऐसा अपराध किया है, जिसमें मृत्युदण्ड की सजा है, तो उसे मौत देने से पहले उसका 'बलात्कार) किया जाता है। क्योंकि इस्लामी रवायत के अनुसार यदि मौत के घाट कुंवारी लड़की (अविवाहिता या जिसका अभी कौमार्य अभी भंग नहीं है) उतारी गई हो तो वह सीधे 'जन्नत' जाएगी। ऐसा न हो, इसके लिए बाकायदा राज्य द्वारा 'बलात्कारियों' की नियुक्ति होती है, ताकि वे 'दोजख' में जायें। (शेष अगले अंक में)

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...............................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का **मुगल उद्यान का नाम यदि नहीं.......**

हाउस में एक खूबसूरत उदयान का निर्माण कराया था, जिसका नाम मुगल उदयान रखा गया था। परन्तु १५ अगस्त १९४७ को भारत के स्वतंत्र हो जाने के उपरान्त वायसराय हाउस का नाम बदलकर राष्ट्रपति भवन रख दिया गया था। परन्तु मुगल उदयान का नाम अभी तक नहीं बदला गया है। उन्होंने कहा है कि कुछ दिनों पूर्व ही मुगलसराय रेलवे स्टेशन का नाम बदला गया है। इसलिये अंग्रेजी शासन काल में रखे गये नाम मुगल उदयान को भी शीघ्र बदल दिया जाये। श्री शर्मा ने कहा है कि मुगल उदयान आम जनता के दर्शनार्थ सुलभ नहीं था। परन्तु भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इसे आम जनता के दर्शनार्थ खुलवाया था। इसलिये मुगल उदयान का नाम बदल दिया जाये तथा इसका नाम डा. राजेन्द्र प्रसाद उदयान रख दिया जाये। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि गुलामी के प्रतीकों को शीघ्र समाप्त किया जाये। उन्होंने कहा कि मुगलों ने हिन्दुस्तान के हिन्दुओं पर घोर अन्याय किया है। उसने करोड़ों हिन्दुओं का धर्मांतरण कराया है तथा लाखों मंदिरों को तोड़ा है। यहां तक कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जन्मस्थान मंदिर को भी तोड़कर बाबरी मस्जिद बना दिया। इसलिये भारतीय संस्कृति एवं पहचान को नष्ट करने वाले मुगलों के नाम कोई उदयान या सड़क का नाम स्वीकार्य नहीं होगा।

शेष पृष्ठ 1 का **आतंकवाद पर भारत को बड़ी........**

को विशेष रूप से नामित वैश्विक आतंकवादी एसडीजीटी घोषित कर दिया है। अमेरिकी विदेश मंत्रालय की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि सितंबर, २०१६ में सलाहुद्दीन ने कश्मीर मसले की किसी शांतिपूर्ण समाधान की कोशिश को बाधित करने का संकल्प लिया था, अधिक से अधिक कश्मीरी युवाओं को आत्मघाती हमलावर बनाने की चेतावनी दी थी और कश्मीर घाटी को भारतीय सुरक्षाबलों के लिए कब्रगाह में तब्दील करने का संकल्प भी लिया था, बयान में आगे कहा गया है हिजबुल मुजाहिदीन के वरिष्ठ नेता रहने के दौरान सलाहुद्दीन के नेतृत्व में हिजबुल ने जम्मू एवं कश्मीर में अप्रैल २०१४ को हुए बम विस्फोट हमले सहित अनेक आतंकवादी हमलों की जिम्मेदारी ली। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से कहा है कि यदि अमेरिका आंतकवाद को समाप्त करना चाहता है तो, पाकिस्तान स्थित आंतककियों के अड्डों पर बड़ी कार्रवाही करते हुए उसे नष्ट करें। पाकिस्तान ही आंतकवाद का जनक है।

शेष पृष्ठ 7 का **कैसे हो सशक्त भारत........**

हथियार, नशीले पदार्थ व अन्य देशद्रोही घटनाओं में लिप्त पाये जाने वाले अपराधी अधिकांश मुसलमान ही मिलेंगे। इन सबके पीछे अहम भूमिका में पाक गुप्तचर संस्था (आई एस आई) व कुछ आतंकी संगठन ही है, जो दशको से भारत विरोधी षडयंत्र रचते आ रहे है। अनेक अवसरों पर पकडे जाने वाले ऐसे आतंकी व अन्य अपराधी पकडे जाने के बाद भी न्यायायिक प्रक्रिया में अनेक कमियां होने से छूटते रहते है और फिर पकडे जाने व छूटने का सिलसिला कुछ वर्षो तक चलता है। धीरे धीरे ऐसे आतंकी तत्व अपनी पहचान छिपाने में सफल होकर सुरक्षित हो जाते है। ऐसे तत्वों से देश की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा के लिए सरकार को कठोरता से निपटना होगा। ऐसे देशद्रोहियों के फैले हुए नेटवर्क और ओवर ग्राउंड वर्कर(OGW) जो दीमक के समान चुपचाप राष्ट्र को खोखला करने में लगे हुए है, के भेद खुलने से शत्रुओं के षडयंत्रो पर अंकुश लगाया जा सकता है। अतः इन विषम परिस्थितियों और समस्याओं को सफलता पूर्वक नियंत्रित करने के लिए सर्वप्रथम राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री और उनके साथियों को गांधी–नेहरु की पाक परस्त व मुस्लिम उन्मुखी राजनीति की छाया से बाहर निकलना होगा। तभी भारतीय मूल्यों का सम्मान करने वाले वर्तमान सत्ताधारी **शठे शाठयम समाचरेत** (दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार) का पालन करते हुए सशक्त व समर्थ भारत का निर्माण कर पायेंगे। मोदी जी का जुमला भी तभी सार्थक होगा जब वे शत्रु को उसी की भाषा में समझाने का राष्ट्र से किया गया वचन पूरा करेंगे?

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई
डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

देश भावना से ओतप्रोत है मद्रास, उच्च न्यायालय का वंदेमातरम को अनिवार्य करने का निर्णय हिंदू संगठनों ने निर्णय का किया स्वागत

मद्रास हाई कोर्ट ने तमिलनाडु के सभी स्कूलों में सप्ताह में दो बार वंदेमातरम गाना अनिवार्य कर दिया है। सरकारी व निजी प्रतिष्ठान भी माह में एक बार इसका आयोजन करेंगे। अदालत ने कहा कि बंगाली व संस्कृत में गाने में परेशानी हो तो तमिल में इसका अनुवाद किया जाए। जस्टिस एमवी मुरलीधरन ने अपने फैसले में कहा कि सोमवार व शुक्रवार को सरकारी व निजी स्कूलों में इसका आयोजन किया जाए। किसी संस्थान या व्यक्ति को इसे गाने या बजाने में परेशानी हो तो उसके साथ जबरदस्ती न की जाए, लेकिन ऐसा न करने पर कोई ठोस कारण बताया जाना जरूरी है। अदालत ने कहा कि युवा हमारे देश का भविष्य हैं। इस फैसले से उनमें देशभक्ति की भावना जागृत होगी और वे इस महान देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे। यह मामला के. वीरामनी की याचिका से संबद्ध है। बीटी असिस्टेंट की लिखित परीक्षा में उन्होंने वंदेमातरम को लेकर जवाब दिया था कि इसे मूल रूप से बंगाली में लिखा गया, लेकिन उनका जवाब गलत माना गया। उन्हें ८९ अंक मिले, जबकि परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए ९० अंक जरूरी थे। इसके बाद वह अदालत पहुंचे। वीरामनी के वकील ने बताया कि बंकिम चंद्र चटर्जी ने वंदेमातरम बंगाली व संस्कृत दोनों भाषाओं में लिखा था। सरकार ने अपनी दलील में कहा कि मूल रूप से राष्ट्रीय गीत की रचना संस्कृत में की गई थी, बाद में इसका बंगाली में अनुवाद किया गया। अदालत ने सरकार से विस्तृत ब्योरा तलब किया था। सरकार के प्रतिनिधि ने कहा कि वंदेमातरम मूल रूप से संस्कृत भाषा में है, अलबत्ता चटर्जी ने इसे बंगाली में लिखा।' सोमवार, शुक्रवार को तमिलनाडु के स्कूलों में गाया जाएगा राष्ट्रीय गीत ' सरकारी और निजी प्रतिष्ठान माह में एक बार करेंगे आयोजन। हिंदू संगठनों ने मद्रास उच्च न्यायालय के इस फैसले का स्वागत किया है। हिंदू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने न्यायालय के इस निर्णय को भारत के युवाओं में देश प्रेम की भावना बढ़ाने के लिए मिल का पत्थर माना है उन्होंने कहा कि आज देश में भौतिकतावाद की आंधी बह रही है जिसके कारण देश का युवा कही न कही देश भावना से दूर होता जा रहा है और ऐस समय में इस तरह का निर्णय देश भावना का विकास करने जैसा है। हम यह उम्मीद करते हैं कि जल्द ही इसी तरह का निर्णय केन्द्र सरकार करेगी और तमिलनाडु के साथ संपूर्ण भारत में वंदेमातरम् आनिवार्य होगा। वहीं, हिंदूमहासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक ने इस निर्णय को भारत की जीत करार दिया और देश की भाजपा सरकार से इसे देश भर में जल्द से जल्द लागू करने की मांग की।

ललित मैनी

नारी सशक्तिकरण

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारियों का यथोचित सत्कार होता है वहाँ देवताओं का वास होता है। मनु के इन वचनों को व्यवहार में लाने, नारी–मुक्ति का सूत्रपात करने तथा वन्दनीया मातृशक्ति को उसका वास्तविक स्थान दिलाने में आर्यसमाज के संस्थापक युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान अद्वितीय है। यह सर्वविदित है कि अतीत में जब नारी शक्ति को शिक्षा व वैदिक कर्मकांड से भी वंचित कर दिया गया था, उन्हें न तो वेद के पठन–पाठन और श्रवण का अधिकार था, और न ही समाज में उनकी विशिष्ट स्थिति थी, बल्कि बालविवाह, सतीप्रथा जैसी अमानवीय कुरीतियों से वे अभिशप्त थीं, तब ऐसे समय में ऋषिवर दयानन्द ने ही नारी की वेदना को समझा और उन्हें वास्तविक अधिकार दिलाने के लिए कठोर संघर्ष किया। निश्चय ही, हमारे वैदिक दर्शन एवं सहस्राब्दियों पूर्व के परम्परागत परिदृश्य में नारी महिमा के उद्‌गीतों का गायन है। उसे पंचायतन देवपूजा में 'मातृदेवो भव' के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। स्मृतिकारों ने जहाँ नारी सम्मान की उद्‌घोषणा की है वहीं वेद–वेदांगों व ब्राह्मणग्रन्थों में मातृशक्ति को 'सहस्रं तु पितृन माता गौर वेणाति रिच्यते' अर्थात् 'दस उपाध्यायों से एक आचार्य, एक सौ आचार्यों से एक पिता व एक सहस्र पिताओं से भी एक माता की श्रेष्ठता नियत कर' उसे सर्वोत्कृष्ट रूप में विभूषितकिया है। वैदिक चिन्तन में मातृशक्ति का स्थान सर्वोपरि माना गया है। हमारे शास्त्रकारों ने कहा है कि 'स्त्रीहि ब्रह्मा बभूविथ' अर्थात् माताएँ अपने सदन की ही ब्रह्मा न होकर समस्त राष्ट्र की ब्रह्मा होती हैं। नारी शक्ति ही समस्त प्रकार के आध्यात्मिक,

शेष पृष्ठ 10 पर

कबिरा खड़ा बजार में

शर्म भी न आयी ऐसी लापरवाही पर

गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में बीते कई दिनों से बच्चों की हो रही मौत के मामले में ऑक्सीजन की कमी को वजह बताने को लेकर प्रदेश की भाजपा सरकार और मीडिया रिपोर्ट्स के बीच द्वंद्व जारी है। सरकार न केवल ऑक्सीजन की कमी को नकारने के लिए पूरी तरह से मोर्चे पर डटी है बल्कि बच्चों की मौत के आंकड़ों को लेकर भी सरकारी तंत्र का खेल जारी है। कहां लापरवाही के चलते इतने बच्चों की मौत पर नेताओं को दुख होना चाहिए था। अब तो केवल मौत के कारणों की ही चर्चा का विषय बना दिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बच्चों की मौत का मामला उजागर होने के २४ घंटे बाद सफाई देने पत्रकारों के सामने आए। बेहद संवेदनशील थे, पत्रकारों को भी संवेदनशील होने की नसीहत दी, पर इन सबसे अलग–थलग यह सोचा जाए कि बच्चों की मौत की वजह ऑक्सीजन की कमी थी या नहीं। मौत का आंकड़ा सरकार के मुताबिक सही है या नहीं। पर इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। गोरखपुर सहित पूर्वांचल के लगभग तीन दर्जन जिलों में, जो हर वर्ष बारिश के मौसम और उसके आस–पास बच्चों पर कहर बनकर टूटने वाली इंसेलाइटिस जापानी बुखार, जैसी बीमारी व अन्य डेंगू अथवा स्वाइन लू आदि हों। सवाल यही है कि सरकार ने ऐसी जानलेवा बीमारियों से बच्चों को बचाने और उससे निपटने के क्या इंतजामात किए थे। अगर इंतजामात थे तो सप्ताह भर के भीतर ६३ बच्चे मौसमी महामारियों के चलते काल के ग्रास में कैसे समा गए। गोरखपुर प्रदेश की भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का न केवल गृहनगर है बल्कि उनकी कर्मभूमि भी है, यहीं गोरक्षपीठ भी है जिसके महंत और मुख्य कर्ताधर्ता योगी जी ही हैं। उसके बावजूद बच्चों के साथ हादसा दर हादसा हो रहा, यह बेहद दुखी करने वाला तो है। केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की योगी सरकार दोनों को ही बच्चों की इस दुखद मौत के मसले पर कटघरे में खड़ा करता है। मृत बच्चों के परिजनों सहित जनता यह जानने को व्यग्र है कि पूर्वांचल के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में बच्चों की मौतों का सिलसिला क्यों नहीं थम पा रहा। यही नहीं, मुख्यमंत्री योगी बीते नौ अगस्त को अपने मंत्रियों और संबंधित उच्चाधिकारियों के साथ इंसेलाइटिस और अन्य मौसमी जानलेवा बीमारियों से निपटने की तैयारियों की समीक्षा के लिए बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज में लगभग चार घंटे तक बैठक भी करते रहे, अस्पताल परिसर में निरीक्षण भी किया। मरीजों और उनके परिजनों से भी मिले, पूरा हाल जाना, उस दिन भी नौ मौतें हुई थीं। पर इसकी भनक मुख्यमंत्री को नहीं लगी, न ही उनके अमले को। मुख्यमंत्री जब पत्रकारों के समाने आए तो सफाई में यह बताने से नहीं चूके कि जब वह मेडिकल कॉलेज गए थे तो वहां के प्राचार्य तथा किसी भी डॉक्टर ने ऑक्सीजन की कमी होने जैसी कोई जानकारी उन्हें दी थी, मुख्यमंत्री का कहना था कि ऑक्सीजन प्रकरण अथवा बच्चों के लिए जानलेवा बनी बीमारियों से निपटने में आने वाली किसी भी समस्या की जानकारी उन्हें कॉलेज के प्राचार्य अथवा किसी डॉक्टर द्वारा नहीं दी गई। मुख्यमंत्री की बात को मान लेते हैं तब भी सवाल बना रहता है कि आखिर भारत की स्वतंत्रता के ७० साल बाद भी इस देश में बच्चों की जान इतनी सस्ती क्यों है। इस शर्मनाक हादसे के बाद सत्ता पक्ष अपना तर्क रख रहा है तो विपक्ष बयानबाजी से अपनी राजनीतिक जमीन तलाशने में जुट गया है, हालांकि विपक्षी दलों के सामने में भी यही बड़ा सवाल है कि इंसेलाइटिस की समस्या गोरखपुर सहित पूर्वांचल में लंबे समय से है, ऐसे में पूर्ववर्ती सरकारों ने इससे निपटने के लिए कोई इंतजाम क्यों नहीं किया।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 30 अगस्त से 05 सितम्बर 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।